श्रीराम जन्म भूमि का
रक्त रंजित इतिहास
ताला कैसे खुला?

श्री

श्रीराम जन्मभूमि

का

रक्तरंजित इतिहास

लेखक—

स्व० पं० श्रीरामगोपाल पाण्डेय "शारद"

साहित्यरत्न

प्रकाशक—

पं० द्वारिकाप्रसाद शिवगोविन्द पुस्तकालय,

कोतवाली के सामने, अयोध्या

[मूल्य ५.०० रुपया

विषय-सूची

❀ जन्म-भूमि ❀

आज से नौ लाख वर्ष पूर्व त्रेता युग के चतुर्थ चरण में साक्षात् परब्रह्म देवाधिदेव मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी इसी पावन भूमि में अवतरित हुए थे। इसी स्थल पर उन्होंने अपना बालचरित किया था। इसी स्थल की पवित्र रज में लोट-पोट कर वेदान्त वेद्य वेदान्त सिद्धान्त श्री राघवेन्द्र ने भगवान् भूत भावन भोलानाथ और भक्तराज श्री काकभुसुण्डि जी को अपनी शिशु लीला से आनन्द विभोर किया था कहना नहीं होगा कि उस समय आनन्द कन्द का यह जन्म स्थल सुवर्ण मणि माणिक मुक्ता खचित एक बड़े विशाल राजमहल के रूप में था। आदि कवि श्री महर्षि वाल्मीकि जी अपनी रामायण में जन्मभूमि के राजप्रासाद का चित्र अपनी तूलिकामयी लेखनी से खींचते हुए लिखते हैं कि :—

प्रासादैरत्नविकृतैः पर्वतैरूपशोभिताम् ।
कूटागारैश्च सम्पूर्णामिन्द्रस्येवामरावतीम् ॥१५॥
चित्रामष्ट पदाकारां वरनारी गणैर्युताम् ।
सर्व रत्नसमाकीर्णां विमान गृह शोभिताम् ॥१६॥
विमानमिव सिद्धानां तपसाधिगतं दिवि ।
मुनिवेशित वेश्मान्तां नरोत्तम समावृताम् ॥१८॥

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड

अर्थात्—पर्वत के समान उच्च रत्न खचित महलों से जन्मभूमि शोभायमान थी जिसमें स्त्रियों के क्रीड़ा गृह भी बने हुए थे जिनकी सुन्दरता देखकर यही जान पड़ता था कि यह इन्द्र की दूसरी अमरपुरी है। राजभवन का रंग सुनहला था अनेक रूपवती स्त्रियाँ उसमें निवास करती थीं। जहाँ-तहाँ रत्नों के ढेर लगे रहते थे और गगन चुम्बी सतखण्डे गृह जिस तरफ दृष्टि उठाइये उसी ओर दिखाई पड़ते थे। वे इस भाँति प्रतीत होते थे जैसे तप द्वारा स्वर्ग में गये हुए सिद्ध पुरुष के विमान गृह बने हों और उन भव्य भवनों में उत्तम कोटि के प्राणियों का निवास था।

अयोध्या के अतीत में जन्मभूमि का इस प्रकार का वैभव था। भगवान श्रीराघवेन्द्र के साकेत गमन के पश्चात् अयोध्या उजड़ गई किन्तु जन्मभूमि सुरक्षित रही। कुछ दिन के बाद श्रीराघवेन्द्र के कनिष्ठ पुत्र महाराज कुश ने राजधानी अयोध्या का पुनर्निर्माण कराया और सूर्यवंश की ४४ पीढ़ियों के बाद महाराज बृहद्बल तक इसका सम्मान रहा। इसके बाद महाभारत के व्यापक संग्राम में चक्रव्यूह निर्मित होने पर अभिमन्यु के हाथों से कौशलराज बृहद्बल वीर गति को प्राप्त हो गये। एक बार अयोध्या उजड़ गई, किन्तु जन्मभूमि अपना मस्तक उठाये हुए उसी प्रकार मुस्कराती रही।

भगवान बुद्धदेव के निर्वाण के पश्चात् जब सारे भारत में बौद्ध धर्म का प्राबल्य हो गया तो जन्मभूमि का विशाल मंदिर जीर्ण-शीर्ण

हो चला था। बौद्ध धर्म के प्रेमियों का ध्यान इस ओर आकर्षित नहीं हुआ, अतः कुछ समय के बाद मन्दिर गिरकर नष्ट-भ्रष्ट हो गया, किन्तु मन्दिरस्थ मूर्ति उसी प्रकार सुरक्षित थी। तत्कालीन सनातन धर्मी जनता एक वृक्ष के नीचे उसी पर श्री रामनौमी के दिन पुष्पादि चढ़ाकर विशेष उत्सव मनाया करती थी।

ईशा की एक शताब्दी के पूर्व भारत के बौद्ध राजा मिहिर गुप्त ने जो सनातन धर्म का घोर विरोधी था जन्मभूमि के उस प्राचीन श्रीराम मन्दिर को जिसकी स्थापना भगवान् श्रीरामचन्द्रजी के पुत्र लवकुश ने की थी बल-पूर्वक गिरवा दिया इस प्रश्न को लेकर भयंकर संग्राम हुआ सनातनी हिन्दुओं को पराजित करके मिहिर गुप्त अपने कार्य में सफल हो गया, किन्तु उसकी यह सफलता चिरस्थायी नहीं रह सकी। ठीक उसके तीन मास और बीस दिन के उपरान्त शुंग वंशी राजा द्युमत्सेन ने मिहिर गुप्त की राजधानी कौशाम्बी पर अधिकार कर लिया मिहिर गुप्त इस युद्ध में जान से मारा गया, किन्तु रामजन्मभूमि उसी बर्बादी की अवस्था में पड़ी रही इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया।

महाराज विक्रमादित्य और जन्मभूमि

ईशा की शताब्दी के एक शतक पूर्व अवन्तिकापति महाराज विक्रमादित्य आखेट करते हुए श्री अयोध्या आये और यम स्थल

(जमथराघाट) पर पतित पावनी श्री सरयू नदी के तट पर एक आम के वृक्ष के रसाल वन में घोड़े से उतर कर थोड़ा विश्राम करने लगे इतने में उन्होंने देखा कि एक अत्यन्त सुन्दर युवक राजपुत्र श्याम रंग के अश्व पर चढ़कर वहाँ आया, उसके सारे अङ्ग राजकीय आभूषण से सुसज्जित थे। वह अत्यन्त काला था और कृष्ण ही वस्तु धारण किये हुए था। यहाँ तक कि कृष्ण वर्ण के ही पुष्पों की माला उसके कण्ठ में पड़ी हुई थी। भगवान् सूर्य की देदीप्यमान किरणें उसके रत्न खचित स्वर्णाभरणों पर पड़कर अपनी दिगन्त व्यापिनी आलोक माला से उस शान्त रसाल वन की वनस्थली को आलोकित कर रही थीं वह राजपुत्र अपने घोड़े सहित श्री सरयू नदी में प्रवेश कर गया थोड़ी देर के पश्चात् जब वह स्नान कर जल के बाहर निकला तो उसमें बड़ा विचित्र परिवर्तन हो गया था अर्थात् उसके शरीर का श्यामरंग बदल कर गौर वर्ण हो गया था। काले वस्त्र भी श्वेत हो गये थे। कृष्ण पुष्पों की मालायें भी सफेद हो गई थीं। उसके इस प्रकार के परिवर्तन को देखकर सम्राट् विक्रमादित्य बड़े चकित हुए और आश्चर्य में पड़कर उसके समीप जाकर इस प्रकार के आकस्मिक परिवर्तन का कारण पूछा तो उस राजपुत्र ने उत्तर दिया कि यह जानने के पूर्व तुम मुझे अपना परिचय दो।

महाराज विक्रमादित्य ने कहा कि मैं महाराजा विक्रमादित्य हूँ मेरे पूज्य पिता महाराजा गन्धर्वसेन के दो पुत्र थे। पहले महाराजा

भर्तृहरि और दूसरा उनसे छोटा मैं, मेरे ज्येष्ठ भ्राता महाराजा भर्तृहरि के सिंहासन त्याग कर महात्मा श्री गुरु गोरख नाथ जी की शरण में जाकर सन्यास ले लेने के पश्चात् भारत की राज्यश्री मुझे प्राप्त हुई है और मैं यथा साध्य जनता जनार्दन की सेवा कर रहा हूँ। एक राजा होने के नाते मुझे यह अधिकार है कि मैं श्रीमान् का परिचय प्राप्त करने की धृष्टता एवं साहस करूँ।

राजपुत्र ने उत्तर दिया, राजन मैं तीर्थराज प्रयाग हूँ। प्रत्येक वर्ष मकर संक्रान्ति के अवसर पर जब भगवान् सूर्य, मकर राशि पर प्रवेश करते हैं तब शास्त्रों ने मेरी राजधानी का निवास त्रिवेणी संगम का स्नान सब पापों का नाश करने वाला बतलाया है। इसी आधार पर भूमण्डल की कोटि-कोटि जनता प्रयाग पहुँच कर गंगा यमुना एवं सरस्वती रूपी त्रिवेणी के संगम में स्नान कर अपने कोटि जन्मों के संचित प्रारब्ध और क्रियमाण पापों को भस्म करती है और जीवन्मुक्त होकर परम पद की अधिकारिणी बनती है।

तथाकथित पुण्य पर्व में स्नान करने वाले लक्षाधिक कोटि-कोटि जनता की पापराशि अपने पार्थिव शरीर पर धारण करने के कारण मैं कृष्ण वर्ण हो जाता हूँ और जब श्रीमर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राघवेन्द्र की पुरी में आकर स्नान करता हूँ तो मुझे देव दुर्लभ दिव्य शरीर की प्राप्ति होती है।

तीर्थराज प्रयाग के कथन को सुनकर महाराज विक्रमादित्य बड़े चकित हुए और उन्होंने फिर पूछा कि भगवान् यह तो बताइये कि आखिर जिस पाप राशि को आप पुण्य सलिला श्री सरयू जी में विसर्जित करके प्रति वर्ष चले जाते हैं आखिर उसका क्या होता है ? क्या वह इस स्थान में आकर श्री सरयू जी में स्नान करने वाले प्राणी को तो नहीं प्राप्त होती ।

तीर्थराज ने उत्तर दिया नहीं । श्री सरयू जी में तो जन्म जन्मान्तर की पापराशि को धो देने की सामर्थ्य विद्यमान है । अतः जो पापराशि मेरे शरीर से उतर कर पावन सलिला श्री सरयू जी की शान्त जलराशि में विसर्जित होती है वह भी लक्ष्मणघाट सहस्रधारी पर स्थित रहने वाले बड़वानल के कड़ाह में भस्म हो जाती है । जिस समय वह पाप राशि उस बड़वानल के कड़ाह में भस्म होने लगती है उस समय जो छीटे कड़ाह से उड़ते हैं वे मछलियां होती हैं, और उन मछलियों को जो खाते हैं उन्हीं के ऊपर वह पाप चढ़ बैठता है ।

यह सुनकर महाराज विक्रमादित्य ने भक्ति भाव से श्री तीर्थ-प्रयाग को प्रणाम किया और पूछा कि भगवान् बड़े पुण्य से मुझे श्रीमान् के दिव्य दर्शन प्राप्त हुए हैं अतः बताइये कि मैं क्या करूँ ? तीर्थराज, प्रयाग ने कहा कि दैव दुर्विपाक से भगवान श्रीरामचन्द्र की जन्मभूमि अयोध्या नष्ट-भ्रष्ट हो गई है आप इसका पता लगाकर इसका पुनः उद्धार कीजिए ।

विक्रमादित्य ने कहा महाराज अयोध्या तो उजड़ गई है स्वर्णमय राजप्रासादों के स्थान पर अब चारों ओर मिट्टी के ऊँचे-ऊंचे स्तूप दिखाई देते हैं ऐसी स्थिति में मुझ यह कैसे विदित होगा कि समस्त अयोध्या नगरी का क्षेत्रफल कितना है और किस स्थान पर कौन सा तीर्थ है ? इस पर तीर्थराज ने उत्तर दिया कि यहाँ से लगभग आधे योजन की दूरी पर मणि पर्वत है उसके ठीक दक्षिण चौथाई योजन के अर्ध भाग में गवाक्ष कुण्ड है। गवाक्ष कुण्ड से पश्चिम तट से सटा हुआ रामनामी वृक्ष अयोध्या की परिधि नापने के लिये पितामह ब्रह्माजी ने लगाया था। सहस्त्रों मन्वन्तरों से यह वृक्ष अभी तक वहाँ उपस्थित है। मणि पर्वत के ठीक पश्चिम सटा हुआ गणेश कुण्ड[1] नामक एक सरोवर है उसके ऊपर शेष भगवान का एक मन्दिर बना हुआ है जो कि आजकल जीर्णशीर्णावस्था में है। वहाँ से पाँच सौ धनुष पर ठीक वायव्य कोण पर भगवान श्रीराम की पावन जन्मभूमि है उस रामनामी वृक्ष के तने डालियां आदि सभी श्रीराम नाम से अंकित हैं एक नव प्रसूता गाय लेकर बछड़े के सहित तुम श्री रामनामी वृक्ष से एक मील

१—अब इस स्थान पर शीशपैगम्बर नाम की एक मस्जिद है जिसे सन् १६७५ में शेष भगवान के मन्दिर को गिरा कर औरङ्गजेब ने बनवा दिया है।

यह वृक्ष अभी तक विद्यमान है।

इर्द-गिर्द घुमाओ जिस स्थान पर वह गाय गोबर करदे वही स्थान मणि-पर्वत है। फिर वहाँ से पाँच सौ धनुष नाप कर उसी ओर उस गाय को ले जाकर घुमाओ जहां उसके स्तनों से अविराम दूध की धारा गिरने लगे बस समझ लेना कि भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि वही है। बस उसी स्थान से पुराणों में वर्णित क्रम के अनुसार तुम्हें अयोध्या के समस्त तीर्थों का पता लग जायगा। यदि तुम बताये हुए इस क्रम के अनुसार नष्ट-प्राय अयोध्या का पता लगाकर इसका पुनरुद्धार करोगे तो महान् यश प्राप्ति के साथ भगवान् श्रीराघवेन्द्र की परम अहेतुकी कृपा के अधिकारी बनोगे, इतना कहकर तीर्थराज प्रयाग अदृश्य हो गये।

ठीक श्रीराम नौमी के दिन पूर्व वर्णित क्रम से सम्राट विक्रमादित्य ने एक सवत्सा नवप्रसूता गाय घुमाया। जब वह जन्मभूमि पर पहुँची तो उसके स्तनों से आप दूध की धारा गिरने लगी बस उसी स्थान पर महाराज विक्रमादित्य ने श्रीराम जन्मभूमि के भव्य मन्दिर का निर्माण करा दिया—

॥ कसौटी के चार खम्भे ॥

जन्मभूमि के निर्माण करते समय जब नींव दी जाने लगी तो पृथ्वी के नीचे भीतर कसौटी पाषाण के ८४ खम्भे और एक पाषाण विनिर्मित भगवान श्रीराम की भव्य प्रतिमा प्राप्त हुई। यह प्रतिमा एक ही काले पाषाण पर बनाई गयी थी।

(वर्गीय प्रबन्धक से)

जिसमें राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन और सीता की प्रतिमायें साथ साथ थीं। उन्हीं ८४ खम्भों के ऊपर उच्च प्रासाद का निर्माण हुआ तथा वही प्रतिमा उस जन्मभूमि में स्थापित कर दी गई। कसौटी के उन चौरासी खम्भों के सम्बन्ध में लोमस रामायण में लिखा है कि इन खम्भों का निर्माण सूर्य्य वंशीय महाराज अनरण्य ने देवशिल्पी विश्वकर्मा द्वारा कराया था और वे सूर्य वंशीय महाराजाओं की विश्वविख्यात राजसभा में लगाये गये थे, किन्तु जब लंकाधिपति रावण का तृतीय आक्रमण अयोध्या पर हुआ और युद्ध में महाराज अनरण्य वीरगति को प्राप्त हुए तो रावण उन कसौटी के ८४ खम्भों को उखाड़ कर लंका ले गया। जब वह सुवर्ण निर्मित लंकापुरी का नवनिर्माण कराने लगा तो उन्हीं कसौटी के खम्भों पर अच्छे और बुरे सुवर्ण की परीक्षा कर लिया करता था। जब श्रीरामचन्द्रजी के द्वारा लंका का पतन हुआ तो भगवान श्रीराम ने अञ्जनी नन्दन वातात्मज श्रीहनुमान जी से कहा कि हनुमान, सीता का बदला तो रावण के वध से पूर्ण हो गया किन्तु अनरण्य दादा का बदला किस प्रकार पूर्ण होगा ? तब श्री हनुमानजी ने कहा कि लंका की राजसभा में आपके दरबार के ८४ कसौटी पाषाण के स्तम्भ हैं उन्हें उखाड़ ले चलें इससे दिवंगत महाराज अनरण्य की आत्मा को शान्ति होगी। फिर भगवान श्रीराम की आज्ञानुसार वे ८४ खम्भे पुनः उखाड़ लाए गये और पुनः दरबार में लगा दिये गये। पुराणों में तो यहां तक वर्णित है कि जब रावण ने महाराज अनरणय पर विजय

प्राप्त की थी तो उस पर अपनी प्रशस्ति खुदवा दी थी। महाराज अनरण्य ने जब उन स्तम्भों को निर्माण कराया था तब अपनी प्रशस्ति खुदवाई थी एवं जब भगवान श्रीराम लंका विजय कर उन खम्भों को ले आये तो उस पर अपनी प्रशस्ति खुदवाई तथा श्रीपवन नन्दन के ही कथनानुसार वे खम्भे लंका से लाये गये थे। अतः प्रत्येक खम्भों पर हनुमान जी की मूर्ति भी खुदवा दी थी। जो अद्यावधि पर्य्यन्त किसी किसी खम्भों पर मौजूद है। लोमस रामायण में लिखा है कि—

॥ श्लोक ॥

चतुराशितिस्तुते स्तम्भाः कृष्ण पाषाण सुन्दराः।
स्थापिता अनरण्येन विश्वकर्म विनिर्मितः ॥३०८॥
तानुत्पाटयामास रावणो राक्षसेश्वरः।
ससैन्यो विजयी भूत्वा नीत्वा लंकापुरी ययौ ॥३०९॥

(लोमस रामायणे बालकाण्डे)

आगे चलकर फिर लोमस रामायण में कहा गया है कि—

लंका विजय सम्प्राप्तो रामो दशरथात्मजः।
विषिण्ण वदनो भूत्वा हनुमन्तमुवाचह ॥
प्रतिकारो मया प्राप्तः सीता हरण कर्मणि।
रावणस्य बधं कृत्वा लंका दत्वा विभीषणे ॥

मत्पूर्वजस्य भूपस्याऽनरण्यस्य महात्मनः ।
तस्यापमान सम्भार प्रतीकारः कथं भवेत् ॥

इस पर श्री हनुमान जी ने कहा—

चतुरशीतिर्वैस्तम्भा कृष्ण पाषाणनिर्मिताः ।
अनरण्यवधं कृत्वा रावणेन हृताः पुरा ॥
रम्य स्वर्णमयीं लंका युद्ध स्वर्ण परीक्षणे ।
स्थापयित्वा सभा मध्ये रावणो राक्षसाधिपः ॥

भावार्थ—काले पाषाण के देवशिल्पी विश्वकर्मा द्वारा निर्मित सुन्दर खम्भे महाराज अनरण्य ने जो दरबार में स्थापित किये थे उन्हें उखाड़ कर ससैन्य विजयश्री से संयुक्त राक्षसेन्द्र रावण लंका को लेकर चला गया ।

लंका पर विजय प्राप्त कर लेने के पश्चात् दशरथनन्दन श्रीराघवेन्द्र ने विषण्ण वदन होकर श्रीहनुमानजी से कहा कि हनुमान, सीताहरण रूपी कर्म का प्रतिकार मैंने प्राप्त कर लिया अर्थात् रावण का वध कर सुवर्ण मण्डित लंकापुरी मैंने विभीषण को प्रदान कर दी, किन्तु रावण के द्वारा हमारे पूर्वज महात्मा अनरण्य महाराज का जो घोर अपमान हुआ है उसका प्रतिकार किस भाँति होगा ? इस पर श्रीहनुमान जी ने उत्तर दिया कि महात्मा अनरण्य का वध कर डालने के पश्चात् लंकेश रावण उनके दरबार में स्थित देवशिल्पी विश्वकर्मा द्वारा निर्मित कसौटी के कृष्ण पाषाण के ८४ खम्भे उखाड़

कर लंका ले आया है। जब उसने अपनी सुवर्णमयी लंका का निर्माण कराना आरम्भ किया तो उन्हीं कसौटी के खम्भों पर कस कर अच्छे और बुरे सुवर्ण की परीक्षा कर लिया करता था और वे खम्भे रावण ने अपनी राजसभा में स्थापित किये थे इन्हीं को उखाड़ कर अयोध्या ले चलिये।

उन्हीं ८४ कसौटी के खम्भों के ऊपर महाराज विक्रमादित्य ने जन्मभूमि के भव्य प्रासाद का निर्माण किया, कहा जाता है कि, इस भव्य प्रसाद में एक सर्वोच्च शिखर और सात कलश थे आजकल के मनकापुर से इस भव्य मन्दिर का दर्शन होता था। मन्दिर के आस-पास ६ सौ एकड़ का सुविस्तृत मैदान था जिसमें सुन्दर-सुन्दर उद्यान एवं मनोहर लताकुञ्ज थे। उद्यान के बीच में दो सुन्दर पक्के कूप थे जिसमें एक अष्टकोण का था और एक नव कोण का था। अष्टकोण वाले कूप का नाम सीता कूप था जो कि मन्दिर के अग्नि कोण पर स्थित था और कन्दर्प कूप नाम का एक कूप नवकोण का था जो मन्दिर के पूर्व द्वार पर गोपुर के सामने स्थित था। मन्दिर के गोपुर पर नित्य प्रातःकाल शहनाई में भैरवी और सायंकाल में

इन ८४ खम्भों में १२ बाबरी मसजिद के भीतर दो बाहर फाटक पर कजलअब्बास जिसकी प्रेरणा से बाबर ने मस्जिद के लिए मन्दिर तोड़ा था उसकी कब्र के नीचे तथा दो ऊपर शेष में से कुछ लखनऊ म्यूजिम और कुछ लन्दन के संग्रहालय में हैं :

गौरी और श्याम कल्याणे राग गाया जाता था। दश लक्ष रुपया प्रति वर्ष की आय मन्दिर में लगाई गई थी जिससे मन्दिर का कार्य बड़े ठाट से सुचारु ढंग से चला करता था। बड़े.बड़े विद्वान ब्राह्मण भगवान की मंगला आरती के समय श्रीसूक्त और पुरुष सूक्त का सस्वर पाठ भगवान को सुनाते थे। मन्दिर के पश्चिम ओर अतिथिशाला में ब्राह्मण साधू अतिथि अभ्यागतों का उचित सत्कार होने का सर्वोत्तम प्रबन्ध था। एक पाठशाला भी थी जिसमें ऋत्विज ब्राह्मण तैयार किये जाते थे जो देश देशान्तरों में घूम-घूम कर हिन्दू संस्कृति एवं भागवत धर्म का प्रचार करते थे।

ईशा की ग्यारवीं शताब्दी में कन्नौज नरेश जयचन्द अयोध्या आया और उसने मन्दिर के गोपुर लिखित सम्राट विक्रमादित्य की प्रशस्ति को उखाड़ कर अपनी प्रशस्ति लगवा दी। यह बात लोगों को अच्छी नहीं लगी। पानीपत के संग्राम में मुहम्मद गोरी क द्वारा पृथ्वीराज की पराजय के बाद जयचन्द का भी अन्त होगया। इसके बाद भारत में लुटेरे मुसलमानों के आक्रमण प्रारम्भ हो गये उन्होंने जी भर कर जन्मभूमि को लूटा। पुजारियों का कत्लेआम भी किया, किन्तु मन्दिर को तोड़ने एवं मूर्ति को नष्ट करने की हिम्मत उनकी भी नहीं हुई और इस विप्लव के प्रलयकालीन युग में अनेक आक्रमणकारियों के घोर आक्रमण के टक्कर अपनी छाती पर झेलती हुई जन्म-

॥ लाला सीतालिखित श्री अयोध्या के इतिहास से ॥

भूमि अभिमान से अपना मस्तक उठाये मुस्कराती रही और इसकी ओर बुरी आँख उठाकर देखने का भी किसी विधर्मी को साहस नहीं हुआ।

❀ बाबर का आक्रमण ❀

हम ऊपर लिख चुके हैं कि जन्मभूमि पर हूण, बौद्ध, शक और मुसलमानों के अनेक आक्रमण हुए। उन्होंने जी भर कर इसे लूटा किन्तु मन्दिर को तोड़कर मूर्ति को नष्ट-भ्रष्ट कर डालने का साहस किसी का भी नहीं हुआ और जन्मभूमि उसी प्रकार सुरक्षित रही। ईसवी सन् की चौदहवीं शताब्दी में भारत पर मुगलों का अधिकार हो गया। सम्राट बाबर दिल्ली के राज सिंहासन पर बैठा। उस समय जन्मभूमि पर महात्मा श्यामानन्द जी महाराज थे। जन्मभूमि इन्हीं के अधिकार में थी। ये उच्च कोटि के पहुँचे हुए सिद्ध महात्मा थे। इनकी सिद्धता की धाक उस समय चारो ओर फैली हुई थी। इनके हृदय में ऊँच-नीच का भेद-भाव नहीं था। उनके समय में ख्वाजा फजल अब्बास मूसा अशिकान यहाँ आये और महात्मा श्री श्यामानन्द जी महाराजके साधक शिष्य हो गये। उनके सत्संग से ख्वाजा साहब को श्री जन्मभूमि का प्रभाव विदित हुआ और जन्मभूमि पर ख्वाजा साहब की महान श्रद्धा हो गई। एक दिन ख्वाजा साहब ने अपने गुरुदेव महात्मा श्री श्यामानन्द जी महाराज से प्रार्थना की कि अपनी सिद्ध विभूतियों का थोड़ा सा प्रसाद इस गुलाम को भी बख्श दीजिए तो श्री श्यामानन्द जी ने कहा कि हिन्दू धर्म के अनुसार यदि

तुम्हें योग की शिक्षा दी जायेगी तो तुम कर नहीं पाओगे, क्योंकि हिन्दुओं की इतनी पवित्रता तुम रख नहीं सकते और यदि तुम्हें कहा जाय कि तुम हिन्दू धर्म स्वीकार करलो तो भी वह पवित्रता तुम में नहीं आ सकती जो जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार से मनुष्य को प्राप्त होती है अतएव तुम अपने इस्लाम धर्म की शरियत के अनुसार अपने ही मन्त्र "लाइलाह इल्लिल्लाह" का नियम पूर्वक अनुष्ठान करो। ख्वाजा साहब ने उनकी आज्ञानुसार उक्त मन्त्र का उसी नियमानुसार अनुष्ठान करके महान् सिद्धि प्राप्त कर ली। इसी बीच में जलाल शाह नामक एक दूसरा फकीर भी आ गया और ख्वाजा फजल अब्बास की भाँति श्री स्वामी श्यामानन्द जी का शिष्य बनकर रहने लगा। जलाल शाह कट्टर मुसलमान था। उसे जब जन्मभूमि स्थान का महत्व विदित हुआ तो उसे इस स्थान को खुर्द मक्का और सहस्रों नबियों का निवास स्थान सिद्ध करने की सनक सवार हुई ? उसके प्रयत्न से बड़ी लम्बी लम्बी कबरें प्राचीन ढरें की बनवाई गईं। आबे-हयाती जिन्दगी पाने के उद्देश्य से दूर-दूर देशों से मरे हुए मुसलमानों के शव यहाँ अयोध्या के आस-पास लाये जाने लगे। भारतवर्ष भर में इसकी धूम मच गई और भगवान की पुरी कबरों से पाट दी गई।

अनेक आक्रमणों एवं आपत्तियों से बना हुआ श्रीराम जन्मभूमि का मन्दिर अब उनकी आँखों की किरकिरी हो गया। जलालशाह ने एक दिन ख्वाजा फजल से कहा कि इस मन्दिर को तोड़कर मस्जिद बनवानी होगी। इस पर ख्वाजा

साहब ने कहा कि अगर ऐसा हो गया तो भारत में इस्लाम की जड़ बन जायगी।

इन दोनों मुसलमान सिद्धों की सिद्धता की धाक दूर-दूर तक पहुंच चुकी थी। उन्हीं दिनों उदयपुर महाराणा के पूर्वज जिनकी राजधानी पहले चित्तौरगढ़ थी वहाँ के सिंहासन पर महाराणा संग्राम सिंह राज्य कर रहे थे। इन्हें इतिहास में राणा सांगा भी लिखा गया है। फतेहपुर सीकरी जो आगरे के पास है वहाँ बाबर से और साँगा से घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में बाबर राणा साँगा के हाथों से आहत होकर भाग निकला और अयोध्या आकर जलालशाह की शरण ली जलालशाह ने उसे विजयी होने का आशीर्वाद दिया और उससे प्रभावित बाबर, पुनः फतेहपुर सीकरी पहुँचा और राणा साँगा ने २० हजार सेना लेकर बाबर की छः लाख सेना का मुकाबिला किया था जिसमें बाबर के ९० हजार और राणा सांगा के कुल छः सौ सैनिक जीवित थे।

सिद्धों की सिद्धता से प्रभावित होकर बाबर फिर अयोध्या आया। उसके हृदय पर अपनी सिद्धता की धाक जमाकर और शाप की धमकी दे कर जलालशाह ने उसे जन्मभूमि का श्रीराम

---

१ टाड राजस्थान से।

मन्दिर तोड़ कर मस्जिद बनाने के लिए बाध्य किया। बाबर यह काम अपने वजीर मीरबाँकी खाँ ताशकन्दी को सिपुर्द करके दिल्ली चला गया और बाबा श्री श्यामानन्द जी अपने साधक शिष्यों की करतूतों पर पछताते हुए चले प्रतिमा को श्रीसरयूजी में पधरा कर और दिव्य श्रीविग्रह को अपने साथ लेकर उत्तराखण्ड की ओर चले गये। पुजारियों ने मन्दिर का पार्षद आदि सामान हटा दिया और प्रातःकाल मन्दिर के द्वारा पर खड़े होकर कहा कि पहले हम मर जायेंगे तब मन्दिर के द्वारा के भीतर कोई प्रवेश कर सकेगा। जलालशाह की आज्ञानुसार चारो पुजारियों का सिर काट लिया गया और लोगों की मार से मन्दिर भूमि-सात् कर दिया गया।

मन्दिर की सामग्री से ही मस्जिद का निर्माण आरम्भ हुआ। दिन भर में जितनी दीवार बनकर तैयार होता रही। शाम को वह अपने आप गिर पड़ती थी। इस प्रयत्न में लाखों रुपये बरबाद हो गये। महीनों तक यही तमाशा होता रहा। वजीर मीरबाँकी हैरान था कि आखिर यह दीवार कौन गिरा देता है। दीवार के चारो ओर संगीनों का पहरा लगा दिया गया मगर आप से आप दीवार के गिर जाने का क्रम अबाधगति से जारी रहा। दोनों सिद्धों की सिद्धता भी इसी उधेड़-बुन में हवा हो गई। विवश होकर मीरबाँकी ने सारा हाल बाबर को लिख भेजा। बाबर ने उत्तर दिया कि काम बन्द

करके वापस चले आओ। इस पर जलालशाह ने यह चिट्ठी बाबर को लिखवाई कि काम बन्द नहीं हो सकता आप खुद आइये। अन्ततः बाबर आया और उसने हिन्दू महात्माओं को एकत्रित करके पूछा कि मस्जिद कैसे बने ? शाह साहब अपनी हठ नहीं छोड़ रहे हैं। महात्माओं ने उत्तर दिया कि मस्जिद के नाम से इसे श्री हनुमान जी बनने नहीं देंगे अतः इसे श्री सीता पाक स्थान के नाम से प्रसिद्ध कीजिए और कुछ परिवर्तन करिये। इसे मस्जिद का रूप न दीजिए तथा इसमें हिन्दू महात्माओं को भी भजन पाठ आदि करने की स्वतन्त्रता दीजिए बाबर ने यह बात स्वीकार कर ली। मस्जिद के चारो ओर की मीनारें गिरवा दी गईं तथा द्वार पर मुड़िया और फारसी भाषा में श्री सीतापाक स्थान लिखवा दिया गया। उत्तर द्वार पर नष्ट सीतापाक स्थान फिर बनवा दिया गया। मुसलमानों के लिए केवल शुक्र के दिन जुमे की नमाज पढ़ने की आज्ञा दे दी और हिन्दुओं को यह स्वतन्त्रता दे दी कि वे मस्जिद के भीतर भजन पाठ आदि निरन्तर कर सकते हैं। इसके साथ ही चन्दन की एक लकड़ी लगाकर मस्जिद के द्वार में परिवर्तन कर दिया तथा इस प्रयत्न से एक प्रकार से उसे बेकार कर दिया।

इस प्रकार से मुगल सम्राट बाबर ने विक्षुब्ध और दुखी हिन्दुओं के आँसू पोंछे तथा अपनी धर्म कूट-नीति से भगवान

श्रीरामचन्द्रजी की पावन जन्मभूमि की मस्जिद बनवाने में सफल हो सका। इतिहास लेखक कॉनिंघम अपने लखनऊ गजेटियर के ३६ वें अंक के पृष्ठ ३ पर लिखता है कि जन्मभूमि के मन्दिर को गिराते समय हिन्दुओं ने अपनी जान की बाजी लगा दी थी और एक लाख चौहत्तर हजार हिन्दुओं की लाशें गिर जाने के पश्चात ही मीरबाँकी तोप से मन्दिर गिराने में सफल हो सका था।

जन्मभूमि के उद्धारार्थ हिन्दुओं के छिहत्तर हमले

हम ऊपर यह लिख चुके हैं कि बाबर श्रीराम जन्मभूमि के मन्दिर को तोड़कर मस्जिद बनाने में आसानी से सफल नहीं हुआ. मन्दिर के भूलुंठित किए जाने की खबर बिजली की तरह सारे भारत में फैल गई। समस्त भारतवर्ष के भीतर उसकी प्रतिक्रिया हुई यह हम नहीं बता सकते, क्योंकि न तो हम उस समय उपस्थित थे और न हमें इतिहास द्वारा ही इसका कोई सन्तोषजनक प्रमाण मिलता है। इसके दो उदाहरण हैं एक तो उस समय की सरकार ने बाहर के हिन्दुओं को अयोध्या में प्रवेश करने के लिए प्रतिबन्ध लगा दिया था और यह सरकारी आज्ञा प्रचारित की गई थी कि जिस किसी भी व्यक्ति के ऊपर अयोध्या जाने का सन्देह हो वह तत्काल कारा-

लखनऊ गजेटियर से।

गार में डाल दिया जाय। इस सम्बन्ध में माडर्न रिव्यू में राम की अयोध्या शीर्षक एक लेख उक्त पत्र के तारीख ६ जुलाई सन् १९२४ के अंक में प्रकाशित हुआ था। इस लेख के लेखक थे श्रीस्वामी सत्यदेव परिव्राजक। स्वामी श्री सत्यदेव परिव्राजक एक ख्यातिप्राप्त व्यक्ति हैं। उनसे हिन्दी संसार पूर्णतया परिचित है। श्री स्वामीजी ने कई बार विदेशों में भ्रमण कर भारतीय संस्कृति के अमर सन्देश का महामन्त्र अंग्रेज एतिहासज्ञों के बीच में भी फूंका था तथा आपकी लिखी पुस्तकें मेरी कैलास यात्रा' 'संगठन का बिगुल' हिन्दी संसार में पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं: आपको दिल्ली में किसी पुराने कागजातों की छान बीन में प्राचीन मुगल कालीन सरकारी कागजातों के साथ फारसी लिपि में लीथो प्रेस द्वारा प्रकाशित शाही मुहर संयुक्त बाबर का एक शाही फरमान प्राप्त हुआ था, जो अयोध्या में स्थित श्रीराम जन्मभूमि के समय उसे गिराकर मस्जिद बनाने के सम्बन्ध में शाही अधिकारियों के पास जारी किया गया था। आपने अंग्रेजी में उसे माडर्न रिव्यू ६ जुलाई सन् १९२४ ई० में अपने उस धारावाही रूप से प्रकाशित होने वाले लेख के साथ छपवाया था जिसे वे उस समय "श्रीराम की अयोध्या" शीर्षक देकर निकाल रहे थे। हम उस फरमान का अविरल हिन्दी अनुवाद नीचे दे रहे हैं।

माडर्न रिव्यू से उद्‌धृत

शाहशाहे हिंद मालिकुल जहाँ बादशाह बाबर के हुक्म से

हजरत जलाल शाह के हुक्म के बमूजिब अयोध्या में राम की जन्मभूमि को मिसमार करके उसकी जगह उसी के मसाले से मस्जिद तैयार करने की इजाजत दे दी गई है। बजरिये इस हुक्मनामे के तुमको बतौर इत्तिला आगाह किया जाता है कि हिन्दुस्तान के किसी भी गैर सूबे से कोई हिन्दू अयोध्या न जाने पावे जिस शख्स पर यह सुबहा हो कि यह जाना चाहता है फौरन गिरफ्तार करके दाखिले जिन्दा-कार दिया जाय। हुक्म को सख्ती से तामील हो फर्ज समझ कर।

(शाही मुहर)

इससे यह पता लगता है कि उस समय की सरकार भी यह समझती थी कि राम जन्मभूमि को तोड़कर उस जगह मस्जिद खड़ी कर देना आसान काम नहीं है। इसका प्रभाव सारे हिन्दुस्तान पर पड़ेगा। सोई हुई हिन्दू जाति एक बार अँगड़ाई लेकर खड़ी हो जायेगी। फिर तो उससे टकराकर दिल्ली का सिंहासन चूर-चूर हो जाएगा और सारी राजसत्ता धूल में मिल जायगी।

इस फरमान के निकलने का क्या परिणाम हुआ? भारत के हिन्दू जन्मभूमि के उद्धार के लिए कुछ कर सकें या नहीं, इसका हमारे पास कोई प्रमाण नहीं है, किन्तु कनिंघम की लखनऊ गजेटियर में प्रकाशित रिपोर्ट यह बतलाती है कि युद्ध करते हुए एक लाख चौहत्तर हजार हिन्दू जब मारे जा चुके,

उनकी लाशों का ढेर लग गया तब बाबर के वजीर मीरबाँकी खाँ ने तोप के द्वारा जन्मभूमि का मन्दिर गिराया। यह रिपोर्ट कनिंघम ने किस आधार पर दी है इसका भी हमारे पास कोई प्रमाण नहीं है, लेकिन उसकी यह रिपोर्ट कम से कम हिन्दुओं के मारे जाने की है। इसी से पाठक यह जान सकते हैं कि समस्त भारतीय जनता इस अन्याय से क्रुद्ध थी और अपनी समस्त शक्तियों से जन्मभूमि की रक्षा करने के लिए कृत संकल्प थी। हैमिल्टन तो बाराबंकी के गजेटियर में यहाँ तक लिखता है कि जलालशाह ने हिन्दुओं के खून का गारा बना कर उस पर लाहौरी ईंटों की नींव मस्जिद बनवाने के लिये दी थी।

बाबर अपने बाबरनामे में लिखता है—"हजरत फजल अब्बास मूसा आशिकान कलन्दर साहब की इजाजत से जन्मभूमि मन्दिर को मिसमार करके मैंने उसी के मसाले से उसी जगह यह मस्जिद तामीर की।

बाबर नामा पृष्ठ १७३

मसजिद के बन जाने पर भी हिन्दू शान्त नहीं बैठे, वे येन केन प्रकार से राम जन्मभूमि को पुनः प्राप्त करने के लिये कृत संकल्प रहे। हुमायूँ के समय अयोध्या के पास स्थित सराय सिरसिण्डा और राजेपुर नामक ग्राम के सूर्य वंशीय क्षत्रियों में एक बार पुनः जोश आया और दश हजार की संख्या में एकत्रित होकर उन्होंने पुनः जन्मभूमि पर धावा बोल दिया। स्थानापन्न सारी शाही छावनियाँ काट डाली, तम्बू फूँक दिए

और मस्जिद का अगला द्वारा तोड़-फोड़ कर बरबाद कर दिया किन्तु तीसरे दिन शाही कुमक आ गई और सब क्षत्रीय युद्ध करते हुए मारे गये उनके गाँवों में आग लगा दी गई, किन्तु उनके वंशज इस पर भी शान्त नहीं हुये। अकबर के राज्य काल में उन्होंने फिर संगठित रूप से जन्मभूमि पर हमला किया। शाही सेना सावधान थी बड़ी भयंकर मारकाट हुई। जब यह समाचार दिल्ली पहुँचा तो राजा बीरबल और टोडर-मल ने अकबर को बहुत समझाया। हिन्दुओं ने अपनी भयंकर मार से शाही सेना के पाँव उखाड़ कर एक चबूतरा मस्जिद के सामने बना लिया था. अकबर ने उसी पर भगवान के स्थापित करने की आज्ञा दे दी। दीवाने अकबरी में लिखा है—

आज भी फैजाबाद जिले के आस पास के सूर्यवंशीय क्षत्री सिर पर पगड़ी नहीं बाँधते, जूता नहीं पहनते, छत्ता नहीं लगाते, उनके पूर्वजों ने यह प्रतिज्ञा की थी कि जब तक श्रीराम जन्मभूमि का उद्धार नहीं कर लेंगे तब तक जूता नहीं पहनेंगे छत्ता नहीं लगायेंगे और सिर पर पगड़ी नहीं बाँधेंगे, इस नियम का उनके वंशज आज तक कठोरता पूर्वक पालन कर रहे हैं। तत्कालीन कवि जयराम ने अपने दोहे में उस समय के सूर्यवंशीय क्षत्रियों की भीषण भीष्म प्रतिज्ञा का इस प्रकार वर्णन किया है—

जन्मभूमि उद्धार होय, जा‌हि न बैरी भाग।
छाता, पग पनहीं नहीं, औंर न बाँधहि पाग॥

जन्मभूमि को वापस लेने के लिए हिन्दुओं ने २० हमले किये। अपनी हिन्दू रियाया की दिल शिकमी न हो इसलिये शाहंशाहे हिन्द शाह जलालुद्दीन अकबर ने राजा बीरबल और टोडरमल की राय से उनको बाबरी मस्जिद के सामने चबूतरा बनाकर उस पर एक छोटा सा राम मन्दिर तामीर कर लेने की इजाजत बख्श दी और यह हुक्म दिया कि कोई भी शख्स इनके पूजा-पाठ में किसी तरह की रोक-टोक न करे।

(दीवाने अकबरी से)

इसी नीति से कुछ दिनों के लिए यह झगड़ा शान्त हो गया। उस चबूतरे पर स्थित भगवान की मूर्ति का पूजन-पाठ बहुत दिनों तक अबाध गति से चलता रहा। अकबर की कठोर आज्ञा के कारण मुसलमान उनके घड़ी घंटा आदि बजाने और पूजन पाठ में कोई विक्षेप नहीं करते थे। यही क्रम शाहजहाँ के समय तक रहा। जहाँगीर और शाहजहाँ ने भी इस सम्बन्ध में हिन्दुओं का कोई विरोध नहीं किया। सन् १६४० में जब दिल्ली के सिंहासन पर हिन्दू धर्म द्वेषी औरंगजेब बैठा तब जन्मभूमि के इतिहास के पृष्ठ में एक क्रांतिकारी नया अध्याय आरम्भ हुआ।

❁ औरंगजेब का आक्रमण ❁

राजसिंहासन पर बैठते ही सबसे पहले औरंगजेब का ध्यान अयोध्या की ओर गया। प्रातः देखा गया है कि जैसा राजा होता है वैसे ही उसके कर्मचारी एवं अधिकारी बन हो

जाते हैं। जहाँ अकबर के समय में हिन्दू जाति के प्रति सहानुभूति रखने वालों की अधिकता थी वहाँ औरंगजेब के समय में हिन्दू धर्म द्वेषियों का प्रावल्य हो गया. सिंहासन पर बैठते ही मुल्लाओं ने औरंगजेब के कान भरने शुरू किये उसका ध्यान राम जन्मभूमि की ओर दिलाया औरंगजेब ने अपने सिपहसालार जाबांज खाँ की अध्यक्षता में एक जबरदस्त सेना भेज दी। वह सेना अयोध्या आ पहुँची। पुजारियों को पहले ही यह मालूम हो गया था अतःउन्होंने पुनः भगवान की मूर्ति एवं पूजा का सामान छिपा दिया तथा रातोरात देहातों में घूम-घूम कर मन्दिर पर आक्रमण होने की सूचना हिन्दुओं को दे दी थी रात ही रात हिन्दुओं का एक जबरदस्त दल मन्दिर के रक्षार्थ श्रीराम जन्मभूमि पर आ डटा, उन दिनों अयोध्या में अहिल्याघाट पर परशुराम मठ° में स्थित वैष्णवदास नाम के एक महात्मा निवास करते थे। दक्षिण प्रान्त के समर्थ गुरु श्रीरामदास जी महाराज के शिष्य थे और उन्हीं की आज्ञानुसार सम्पूर्ण उत्तरीय भारत में हिन्दू संस्कृति के प्रचार एवं विधर्मियों से देश का उद्धार करने के लिये घूम रहे थे। इनके साथ दस हजार चीमटाधारी साधुओं का एक जबरदस्त गिरोह था। उस गिरोह के साधु प्रचार,

° यह परशुराम मठ अहिल्या घाट पर अयोध्या में अभी वर्तमान है।

योग साधना, जासूसी, युद्ध विद्या आदि सभी कार्यों में निपुण थे, जन्मभूमि पर औरंगजेबी आक्रमण का समाचार जब इन साधुओं को मिला तो यह साधुओं की जबरदस्त दल सेना हिन्दुओं के दल से मिल गई और इस जबरदस्त दल ने उर्वशी कुण्ड+ पर मुगल सेना का डटकर सामना किया। सात दिन तक लगातार घोर संग्राम होने पर साधुओं के चीमटों की मार से शाही सेना के धुर्रे उड़ गये और वह मैदान छोड़कर भाग खड़ी हुई।

मुगल सेना को पराजित कर भगा देने के पश्चात् यह साधुओं का दल झाऊ के जंगलों में छिप गया। हिन्दुओं का गिरोह भी जहाँ तहाँ अन्तर्ध्यान हो गया और चबूतरे पर स्थित मन्दिर की रक्षा हो गई। इस पराजय का समाचार जब औरंगजेब के पास पहुँचा तो वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और जाबाज खाँ को पदच्युत करके उसके स्थान पर सैय्यद हसनअली को सिपहसालार बनाकर पचास हजार सेना देकर जन्मभूमि को तहस-नहस कर डालने के लिए भेजा।

मगर साधुओं का दल भी असावधान नहीं था। इस गिरोह के कुछ आदमियों को पत्र देकर वैष्णवदास ने गुरु-गोविन्द सिंह के पास भेजा। गुरुगोविन्द सिंह अपने अधीनस्थ

+ उर्वशी कुण्ड आज कल के कालरा अस्पताल के सामने था कुण्ड तो अब नहीं है केवल उसका स्मारक पत्थर लगा हुआ है।

सिक्खों की एक जबरदस्त सेना लेकर उन दिनों आगरे की ओर मुगल सेना की हेंकड़ी भुला रहे थे। वे वैष्णवदास के साथ आकर मिल गये और ब्रह्मकुण्ड+ पर अपना अड्डा जमाया। वैष्णवदास के जासूस कदम-कदम पर मुगल सेना की टोह ले रहे थे। जब उन्हें पता चला कि हसनअली की अध्यक्षता में पचास हजार मुगल सेना आँधी की तरह अयोध्या की ओर उड़ती चली आ रही है और उसके साथ एक तोपखाना भी है तो सिक्ख और साधुओं की सेना ने अपने तीन दल कर दिये। एक दल सिक्खों का एक छोटे से तोपखाना के साथ फैजाबाद के वर्तमान शहादतगंज के पास खेतों में छिप गया। दूसरा दल गृहस्थ क्षत्रियों का था जिसने रुदौली में डटकर शाही सेना का सामना किया और वैष्णवदास का चीमटाधारी गिरोह जालपा पर सरपत के जंगलों में छिपकर सेना की प्रतीक्षा करने लगा।

शाही सेना का पहला मुकाबला रुदौली में क्षत्रियों से हुआ जिसमें साधारण लड़ाई के बाद पूर्ण निश्चित कार्यक्रम के अनुसार वे हट गये और आकर सिक्खों के दल से चुपचाप मिल गये। मुगल सेना ने समझा हिन्दू पराजित होकर भाग गये अतएव वह निश्चिन्त होकर आगे बढ़ी। जैसे ही वह शहादतगंज के पास पहुँची वैसे ही सिक्खों का दल भूखे बाघ

+ आजकल यहाँ गुरु गोविन्द सिंह की स्मृत में सिक्खों का गुरुद्वारा बना हुआ है।

की तरह उन पर टूट पड़ा। पीछे से हिन्दुओं के दल ने भी धावा बोल दिया। सिक्खों ने आगे बढ़कर सबसे पहिले शाही तोपखाने पर ही अधिकार कर लिया। इस दोहरी मार से मुगल सेना घबरा उठी और साहस छोड़कर भाग निकली सरदार हसनअली भी इस युद्ध में मारे गये। इस पराजय का औरंगजेब पर ऐसा असर पड़ा कि लगातार ४ वर्ष तक उसने जन्मभूमि पर आक्रमण करने का नाम तक नहीं लिया।

चार वर्ष तक लगातार आक्रमण न होने के कारण हिन्दू असावधान थे। इससे लाभ उठाकर सन् १६६४ में औरंगजेब ने पुनः श्रीजन्मभूमि पर आक्रमण कर दिया। यह समाचार पाकर हिन्दुओं ने मुकाबला किया, किन्तु शाही सेना के सामने उनकी एक न चली पुजारियों के प्रयत्न से मन्दिरस्थ भगवान की प्रतिमा छिपा दी गई। इस अचानक आक्रमण में दस हजार हिन्दुओं का वध हुआ। मारे गये हिन्दुओं की लाशें मन्दिर के पूर्वीय द्वार पर स्थित नवकोण का एक कन्दर्प कूप नामक कुआँ था उसमें भर दी गईं और चारों ओर से चहारदीवारी उठाकर उसे घेर दिया गया। आज भी वह कन्दर्प कूप "गज शहीदा" के नाम से मन्दिर के पूर्वद्वार पर स्थित है जिसे मुसलमान अपनी सम्पत्ति बतलाते हैं।

आठ दिन तक रात दिन घोर संग्राम

शाही सेना ने जन्मभूमि का चबूतरा खोद डाला। बहुत दिन तक यह चबूतरा गढ़े के रूप में वहाँ पर स्थित

था। हिन्दू जनता श्रीराम नौमी के दिन भक्ति भाव से उसी गढ़े में जल अक्षत पुष्प चढ़ा दिया करती थी। जब लखनऊ की नवाबी का उदय हुआ और लखनऊ की नवाबी की मसनद पर नवाब सहादतअली खाँ तख्तनशीन हुआ तो एक बार फिर हिन्दुओं ने जन्मभूमि पर आक्रमण किया, किन्तु इस बार भी दुर्भाग्य से उन्हें सफलता नहीं मिली।

नवाब नासिरुद्दीन हैदर के समय में फिर हिन्दुओं का जबरदस्त आक्रमण हुआ। इस बार हिन्दू संगठित थे अबकी बार डटकर नवाबी सेना का सामना हुआ। आठवें दिन हिन्दुओं की शक्ति क्षीण होने लगी। जन्मभूमि के मैदान में हिन्दू और मुसलमानों की लाशों का ढेर लगा हुआ था। शाही सेना के सैनिक अधिक संख्या में मृतक हुए थे। इस भयानक-संग्राम में भीटी, हसवर, मकरही खजुरहट, दियरा, अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह आदि भी सम्मिलित थे। शाही सेना इन्हें पछाड़ती हुई हनुमानगढ़ी तक ले आई। हनुमानगढ़ी तक आने पर साधुओं की चीमटाधारी जमात हिन्दुओं से आ मिली। इस जमात में खाकी साधुओं के साथ बड़े-बड़े महन्त भी थे। अबकी बार डटकर घोर संग्राम हुआ। इस युद्ध में शाही सेना के चिथड़े उड़ गये और उसे खदेड़ती हुई हिन्दू सेना ने जाकर जन्मभूमि पर अधिकार कर लिया।

किन्तु यह अधिकार अधिक दिनों तक नहीं रहा। जबरदस्त शाही सेना आकर फिर इनके हाथ से जन्मभूमि छीन ली

श्रीरामजन्मभूमिः—
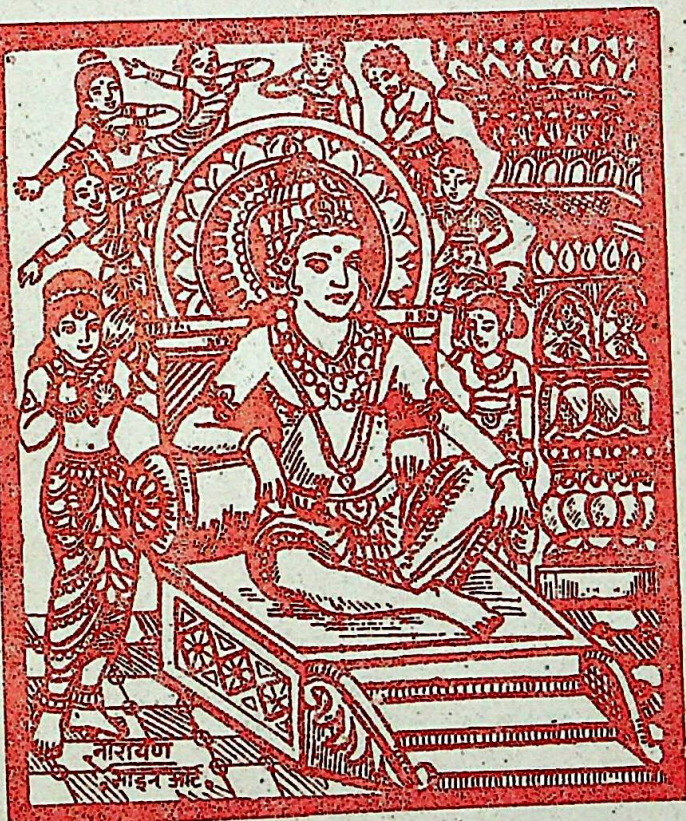
श्रीरामजन्मभूमि का जीर्णोद्धार करनेवाले हिन्दूसम्राट महाराज बिक्रमादित्य जिनका चलाया हुआ बिक्रमीय सम्वत् आज तक चल रहा है।

नवाब वाजिदअली शाह के समय में पुनः हिन्दुओं ने जन्मभूमि के उद्धारार्थ आक्रमण किया। अबकी बार के आक्रमण में अयोध्या के दो चार राजाओं को छोड़कर सभी हिन्दू राजा सम्मिलित थे। फैजाबाद गजेटियर में कनिंघम लिखता है कि इस बार शाही सेना एक ओर खड़ी तमाशा देखने लगी। हिन्दू और मुसलमानों को यह छूट दे दी कि वे लड़कर आपस में निपट लें। यह संग्राम ऐसा भयानक था कि वर्णन करना शक्ति के बाहर है। दो दिन के रात-दिन तक होने वाले भयंकर युद्ध में बुरी तरह मुसलमान पराजित हुए। क्रुद्ध हिन्दुओं की भीड़ उनके मकान फूंकने और कबरें तोड़-फोड़ कर बरबाद करने एवं मस्जिदों को मिसमार करने लगी। यहां तक कि मुर्गियों तक को जिन्दा नहीं छोड़ा। केवल उन्होंने स्त्रियों और बच्चों को हानि नहीं पहुँचाई। सारी अयोध्या में प्रलय मच गयी, मुसलमान अयोध्या छोड़कर अपनी जान लेकर भाग निकले। इतिहास लेखक कनिंघम लिखता है कि यह अयोध्या का सबसे बड़ा हिन्दू मुसलिम बलवा था। मुसलमानों की इस प्रकार की दुर्दशा देखकर शाही सेना ने जिसमें अधिकतर अंग्रेज थे, स्थिति को काबू में किया। सारे शहर में करफ्यू आर्डर की घोषणा कर दी गई। उस समय अयोध्या के महाराज मानसिंह ने नवाब वाजिदअली शाह से कह सुनकर चबूतरा फिर से हिन्दुओं को बनवा लेने की आज्ञा दिलवाई और चबूतरे पर तीन फीट ऊँची खस की टट्टियों का एक छोटा सा मन्दिर बना जिसमें पुनः भगवान की स्थापना की गई।

अंग्रेजी राज्य में जन्मभूमि पर हमला

अंग्रेजी राज्य में दो बार जन्मभूमि पर आक्रमण हिन्दुओं द्वारा हुए। पहला आक्रमण सन् १९१२ में और दूसरा आक्रमण सन् १९३४ में हुआ। पहले आक्रमण में तो बाबरी मस्जिद को हानि नहीं पहुँची किन्तु दूसरे आक्रमण में बाबरी मस्जिद तोड़ फोड़ कर बरबाद कर दी गई किन्तु फैजाबाद के डिप्टी कमिश्नर जे० पी० निकल्सन ने मस्जिद पुनः बनवा दी।

बाबरी मस्जिद में एक जगह पर लिखा है—

२७ मार्च सन् १९३४ मुताबिक ११ जीउल हिज्जा सन् १३५२ हिजरी बरोजे बलवा हिन्दू बलवाई मसजिम शहीद करके असली कुतबए उठा ले गये जिसको त ब्बर खाँ ठेकेदार ने निहायत खूबी के साथ तामीर किया। (बाबरी मस्जिद से)

मुसलमानों द्वारा श्रीराम जन्मभूमि के उद्धार का प्रयत्न

सन् १८ सौ सत्तावन के विप्लव में जब बहादुर शाह को सम्राट घोषित कर विद्रोह का नारा बुलन्द किया गया तो अयोध्या के हिन्दू देवीबख्श सिंह गोण्डा नरेश तथा बागी रामचरण दास की अध्यक्षता में संगठित हो गए। उस समय बागी मुसलमानों के नेता अमीरअली ने अयोध्या और फैजाबाद के समस्त मुसलमानों को इकट्ठा करके कहा कि विरादराने

वतन बेगमों के जेवरातों को बचाने में हमारे हिन्दू भाइयों ने जिस कदर अंग्रेजों से लड़कर बहादुरी दिखाई है इसे हम भूल नहीं सकते। सम्राट बहादुर शाह जफर को अपना बादशाह मानकर हमारे हिन्दू भाई अपना खून बहा रहे हैं : इसलिये फर्जे इलाही हमें मजबूर करता है कि हिन्दुओं के खुदा श्रीराम चन्द्र जी की पैदाइशी जगह पर जो बाबरी मस्जिद बनी है वह हम उन्हें बाखुशी सुपुर्द कर दें, क्योंकि हिन्दू मुसलिम नाइत्तफाकी की सबसे बड़ी जड़ यही है ऐसा करके हम इनके दिल पर फतह पा जायेंगें।

कहना नहीं होगा कि अमीरअली के इस प्रस्ताव का सारे मुसलमानों ने एक स्वर से समर्थन किया, किन्तु अंग्रेजों को यह बात मंजूर नहीं थी। वे चाहते थे कि मस्जिद बनी रहे जिससे हिन्दू और मुसलमानों के दिल आपस में मिलने न पायें, क्योंकि बाबरी मस्जिद के हिन्दूओं को मुसलमानों द्वारा वापस किये जाने की खबर फैल चुकी थी। अंग्रेजों में जो घबड़ाहट इससे फैली इसका प्रमाण हम सुल्तानपुर गजेटियर में प्रकाशित पृष्ठ ३६ पर कर्नल मार्टिन की रिपोर्ट को उद्धृत करके देते हैं।

अयोध्या की बाबरी मस्जिद को मुसलमानों के द्वारा हिंदुओं को वापस दिये जाने की खबर सुनकर हम लोगों में घबड़ाहट फैल गई और यह विश्वास हो गया कि हिन्दुस्तान से अब अंग्रेज खतम हो जायेंगे, लेकिन अच्छा हुआ कि गदर का पासा पलट

गया और अमीरअली तथा बलवाई बाबा रामचरनदास को फांसी पर लटका दिया गया जिससे फैजाबाद के बलवाइयों की कमर टूट गई और तमाम फैजाबाद जिले पर हमारा रोब गालिब हो गया, क्योंकि गोण्डा का राजा देवी बख्श सिंह पहले ही करार हो चुका था। इस काम में राजा मानसिंह मेहदौना वाले ने हमारी बड़ी मदद की।

कहना नहीं होगा कि अमीर अली का यह सत्प्रयत्न अंग्रेजों की कूटनीति के कारण विफल हो गया और १८ मार्च सन् १८५८ को कुबेरटीला पर स्थित एक इमली के पेड़ पर बाबा रामचरनदास और अमीरअली दोनों को फांसी पर लटका दिया गया। बहुत दिनों तक जनता इस इमली के पेड़ पर जिन पर उन दोनों भक्तों को फाँसी दी गई थी, फूल अच्छत चढ़ाती रही। जब अंग्रेजों ने जनता की इतनी जबरदस्त श्रद्धा उन देश भक्तों के प्रति देखी तो उनके अन्तिम स्मारक उस इमली के वृक्ष को भी कटवा डाला। इस प्रकार मुसलमानों द्वारा श्री जन्मभूमि उद्धार के लिए किया गया प्रयत्न अंग्रेजों की कुटनीति से व्यर्थ हो गया।

जन्मभूमि के उद्धार के लिए बाबर के शासन से लेकर आज तक छिहत्तर बलवे हुए जिनकी सूची क्रमबद्ध नीचे दी जा रही है—

१—बाबर के समय में— ४

२—हुमायूं के समय में— १०

३—अकबर के समय में—	२०
४—औरंगजेब के समय में—	३०
५—नवाब शहादतअली के समय में—	५
६—नासिरुद्दीन हैदर के समय में—	३
७—वाजिदअली के समय में—	२
८—अंग्रेजों के समय में—	२
कुल योग—	७६

सबसे अन्तिम भयानक युद्ध जिसमें शाही सेना खड़ी तमाशा देखती थी और हिन्दू मुसलमान आपस में लड़कर फैसला कर रहे थे वह सन् १८५६ में हुआ था, जिसमें सबसे बढ़कर हानि मुसलमानों की हुई थी।

सीता कूप--जन्म भूमि के तीर्थ

यह कूप पहले ज्ञान कूप के नाम से विख्यात था। इसका निर्माण सूर्यवंश के ख्याति प्राप्त महाराजा मान्धाता ने कराया था। यह महाराजा चक्रवर्ती दशरथ जी के आँगन में स्थित था। जब जनकपुर में श्रीरामचन्द्र जी के विवाह का निश्चित हो जाने का समाचार अयोध्या आया और यहाँ से बारात मिथिला गई तो आर्य प्रथानुसार महारानी कैकेयी ने तथा सुमित्रा और महारानी कौशिल्या ने भी उसमें अपने पाँव लटकाये थे। महारानी कैकेयी के लिए कनक भवन बना देने के पश्चात् महाराजा श्री दशरथ जी ने महारानी कौशिल्या से कहा कि प्रिय ! कैकेई ने आग्रह करके कनक भवन बनवा दिया है।

तुम मुझसे कहो कि मैं तुम्हारे लिये करूँ ? तब महारानी कौशिल्या जी ने यही ज्ञान कूप महाराजा दशरथ जी से माँग लिया। जब श्रीसीताजी को मिथिला से आने पर मुँह दिखाई में महारानी कैकेई ने कनक भवन दे दिया तो महारानी कौशिल्या जी ने मुँह दिखावे में यही ज्ञान कूप दे दिया। तब से इसका नाम सीता कूप हो गया। यह पहले अष्ट कोण पत्थर का बना हुआ था। राजमहल का भोजनादि इसीसे बनता था। सन् १६७० में औरंगजेब ने इसे बन्द करवा दिया था। सन् १८५६ के बलवे में जब हिन्दुओं ने जन्म-भूमि पर अधिकार कर लिया तब वह फिर से खोदकर साफ किया गया और फिर इसका निर्माण हुआ। आज कल वह जन्मभूमि मन्दिर के अग्नि कोण पर स्थित है। रुद्रयामल में भगवान शिव सीता कूप के सम्बन्ध में लिखते हैं।

ज्ञान कूपेतिप्रख्यातो मान्धातेन विनिर्मित।
दत्वा च कौशल सुता वधू मुख प्रदर्शने ॥
प्रख्यात ततसौ कूप सीता कूपेति नामकः।
यस्य स्नान मात्रेण सर्वान् कामनामाप्नुयात् ॥

(रुद्रयामल)

अर्थात् - मान्धाता के द्वारा निर्माण किये गये ज्ञान कूप को महारानी कौशिल्या ने जब वधू मुख प्रदर्शन में श्रीसीताजी को दे दिया तब से उसका नाम श्री सीता कूप पड़ गया। जिसमें स्नान मात्र से मनुष्य को समस्त कामनाओं की प्राप्ति होती है।

※ कन्दर्प कूप ※

जन्मभूमि के द्वार पर कन्दर्प कूप नाम का पाषाण विनिर्मित नव कोण का एक कूप था। इस कूप में स्नान करने से वृद्ध मनुष्य भी कन्दर्प (कामदेव) के समान सुन्दर हो जाता था। राजा ययाति ने अपने पुत्र पुरु से यौवनत्व की प्राप्ति करने के पश्चात् इसी कूप में स्नान कर कन्दर्प के समान स्वरूप प्राप्त कर रति कन्या काम पुत्री से विवाह कर अक्षय यौवन का सुख लूटा था। सन् १६७६ में औरंगजेब ने जन्मभूमि पर आक्रमण करने वाले हिन्दू मृतकों के शव से इसे पटवा कर बन्द कर दिया था और इसके किनारे-२ एक हाथ ऊँची एक पक्की दीवार उठवा कर इसका गंजशहीदा नाम रखकर यह मशहूर कर दिया कि यह हमारे धर्म पर प्राण देने वाले मुसलमानों का स्मारक है। ब्रह्म रामायण में लिखा है कि—

तत्रतु निर्मलः कूपो नाम्ना कन्दर्प कूपकः।
यत्रस्नात्वा ययातिस्तु यौवन प्राप्तवाम् पुरा॥
यस्य च स्पर्श मात्रेण सुन्दरत्व कृतामपान्।
प्राप्नुयात् मानवो रूपं कोटि काम विमोहकम्॥
नवकोण युतो रम्यो सुधा स्वादु जलाशयः।
यः पिवेत् सततं वारि स शान्तिमधिगच्छति॥

(ब्रह्म रामयणे बालकाण्डे)

अर्थात् वहीं पर कन्दर्प कूप नामक एक निर्मल कूप है, जिसमें महाराजा ययाति ने पूर्वकाल में स्नान कर यौवन प्राप्त किया था, जिसके सौन्दर्यवर्धक जल के स्पर्श मात्र से मनुष्य करोड़ों कामदेव को लज्जित करने वाला रूप प्राप्त करता है। यह जलाशय अत्यन्त सुन्दर सवकोण का अमृत के समान मीठे जल से भरा हुआ है और जो इसका जल पान करता है वह महान् शान्ति का अधिकारी होता है।

❀ नवरत्न श्री कुबेर जी ❀

इनका नाम पूरा नवरत्न श्री कुबेर जी है। आजकल इसे कुबेर टीला कहते हैं। यह एक ऊंचे स्तूप के रूप में आज भी विद्यमान है। पहले यहां श्री कुबेश्वरनाथ का बड़ा विशाल मन्दिर बना हुआ था। जिसे सैयद सालार मसऊदगाजी ने गिरवा कर मस्जिद का रूप दे दिया था। सिकन्दर लोदी के समय इसके उद्धारार्थ हिन्दू और मुसलमानों में घोर संग्राम हुआ था। श्री रामचन्द्र जी के जन्म के समय भगवान शिव उनके बालस्वरूप के दर्शनार्थ इसी स्थल पर आकर ठहरे और श्री काकभुशिण्डि जी के साथ यहीं उनका दर्शन किया था, क्योंकि भयंकर वेष और सर्पों की मालायें धारण करने के कारण महल की स्त्रियां भयभीत हो जाती थीं इससे वे महल में नहीं जाते थे। यह जन्मभूमि के दक्षिण भाग में स्थित है।

।। छठी पूजा स्थान ।।

यहाँ पर श्री कौशिल्यादि तीनों पटरानियों ने छठी पूजन किया था। बाबर ने मन्दिर गिराकर मस्जिद बना देने के बाद यह स्थान नष्ट कर दिया था, किन्तु मस्जिद की दीवार जब अकस्मात गिरने लगी तो हिन्दू महात्माओं के कहने से इसका नाम सीतापाक स्थान रखकर बाबर ने पुनः बनवा दिया जो जन्मभूमि के उत्तरी फाटक पर चूल्हा चौका बेलन और चरण पादुकाओं के साथ बना हुआ है जिसे कोई कोई सीता रसोई भी कहते हैं।

जन्मभूमि पर बलिदान होने वाले वीर

बाबा श्री वैष्णवदास जी :-

आप शिवाजी के गुरु समर्थ श्रीगुरु रामदास जी महाराज के शिष्य थे। आपके साथ दस हजार जबरदस्त चीमटाधारी साधुओं का एक गिरोह रहता था, जो समस्त उत्तरी भारत में घूम-घूम कर भारतीय संस्कृति का प्रचार एवं विधर्मियों से देश के उद्धार के लिये जनता को तैयार करता था। आपने औरंगजेब के समय अयोध्या के साधु महात्माओं, गृहस्थों तथा सूर्य वंशीय क्षत्रियों को साथ लेकर जन्मभूमि के लिये ३० आक्रमण किए थे। अन्तिम आक्रमण आपका श्री गुरुगोविन्द सिंह जी के साथ हुआ था। मराठों और सिक्खों का अन्त हो जाने के बाद आप अपने बचे हुए साथियों सहित अन्तर्ध्यान हो गये। फिर आपका पता नहीं चला।

बाबा श्री रामचरणदास जी :-

आपने वाजिद अली शाह के समय दो बार जन्मभूमि के उद्धारार्थ आक्रमण किया। दोनों में आप विजयी हुए। सन् १८५८ में भारतीय विप्लव के असफल हो जाने पर कई हजार अंग्रेजों का बधकर डालने एवं फैजाबाद की छावनी उड़ा देने के अभियोग में कुबेर टीले पर एक इमली के पेड़ में अंग्रेजों ने आपको फाँसी पर लटका दिया।

श्री अमीरअली :-

आप सन् १८५७ में विद्रोहियों के नेता थे। आपने अयोध्या और फैजाबाद के मुसलमानों को सम्मिलित कर बाबरी मस्जिद के रूप में बना हुआ श्री जन्मभूमि मन्दिर हिन्दुओं को वापस दिला देना चाहा था। सभी मुसलमान इससे सहमत हो गए थे, किन्तु गदर फेल हो जाने के कारण आप अंग्रेजी सेना द्वारा पकड़ लिये गये और आपको भी बाबा रामचरणदास बागी के साथ फाँसी दे दी गई।

स्वामी श्री महेश्वरानन्द :-

आप आनन्द सम्प्रदाय के सन्यासी थे और हुमायूँ के समय में २४ हजार सन्यासियों के जबरदस्त गिरोह के साथ जन्मभूमि पर आक्रमण करके बाबरी मसजिद शाही अधिकार से छीन ली थी, किन्तु दूसरी बार शाही कुमक आने पर युद्ध करते हुए अपनी सेना सहित मारे गये। आपका आक्रमण सन् १५३० के दिसम्बर मास में हुआ था।

स्वामी श्रीबलरामाचारी:-

आप दक्षिण प्रान्तस्थ कोयम्बटूर के निवासी थे और श्रीरामानुज सम्प्रदायानुयायी थे। अकबर के समय में आपने देहातों में घूम-घूम कर क्षत्रियों को संगठित कर जन्मभूमि के उद्धारार्थ बीस आक्रमण किये। आपकी वीरता से प्रभावित होकर वीरबल तथा राजा टोडरमल की सिफारिश पर अकबर ने जन्मभूमि पर चबूतरा बना लेने की आज्ञा दी थी। आपका देहान्त माघ कृष्ण १४ को प्रयाग में हुआ।

राजा गुरुदत्त सिंह :-

आप सुलतानपुर जिले में स्थित अमेठी राज्य के राजा थे। आपने जन्मभूमि की रक्षा के लिये लखनऊ के प्रथम नवाब शहादतअली खाँ के साथ घनघोर संग्राम करके उसे पराजित किया था। तत्कालीन कवि श्री कवीन्द्र जी अपनी कविता में उक्त रोमाञ्चकारी युद्ध का वर्णन करते हुए लिखते हैं—

समर अमेठी को नरेश गुरुदत्त सिंह,
शहादत की सेना समसेरन सो भानी है।
भाखय 'कवीन्द्र' काली हुलसी जसीसन को।
शीशन को शम्भु की जमात हुलसानी है॥
तहाँ एक जुग्गिनी सुभट खोपरी लै खरी,
श्रोनित पियत ताकी उपमा बखानी है।
प्यालो लै चिनी को छकी जोबन तरंग मानों,
रंग हेतु पियत मजीठ मुगलानी है॥

यह युद्ध सुल्तानपुर गजेटियर के आधार पर सन् १७६३ में हुआ था।

ठाकुर गजराज सिंह–

आप सूर्यकुण्ड के पास स्थित मौजा सराय के निवासी थे। आप सराय, सिरसिण्डा और राजेपुर के क्षत्रियों का संगठन करके ३० आक्रमणों में होने वाले जन्मभूमि के संग्राम में युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। बादशाही सेना ने आपका मकान खोदवा डाला। आपके वंशज अभी सराय में मौजूद हैं, जिनकी यह प्रतीक्षा है कि जब तक जन्मभूमि का उद्धार न होगा हम जूता नहीं पहनेंगे तथा पगड़ी नहीं बाँधेंगे छाता नहीं लगायेंगे।

महन्त उद्धवदास जी–

आप स्थानीय हनुमानगढ़ी निर्वानी अनी के एक महात्मा थे। बाबा श्री उभयराम जी के समय आपने खाकी साधुओं की जमात के साथ जन्मभूमि पर डटकर नवाबी सेना से लोहा लिया था। सन् १८४७ के समय में आप बलवाइयों के नेता थे। गदर के असफल होने पर राजा देवीबख्श सिंह गोण्डा वाले के साथ आप भी कहीं गायब हो गये।

राजा देवीबख्श सिंह–

आप गोण्डा के राजा थे। सन् १८५७ में जन्मभूमि के उद्धारार्थ जो समस्त अवध के राजाओं ने संगठित होकर युद्ध किया था, आप उसके नेता थे। उस युद्ध में मुसलमान बुरी तरह हारे थे।

सन् १८५७ में आप विप्लव के नेता हो गये और, उसके असफल होने पर आप गायब हो गये। एक बार आप अयोध्या में दिखाई दिये किन्तु पुलिस के पीछा करते ही आप उनकी आंखों में धूल झोंक कर सरयू नदी तैर कर निकल गये उसके आपका पता नहीं लगा।

राजा महताब सिंह–

आप भीटी के राजा थे और बद्रीनारायण की यात्रा करने के लिये निकल गये थे अयोध्या आने पर जब आपको बाबर के वजीर मीरबाँकी द्वारा श्री जन्मभूमि मन्दिर के ध्वंश किये जाने का समाचार विदित हुआ तो बद्रीनारायण की यात्रा को स्थगित कर आपने समस्त अवध के क्षत्रियों को एकत्रित कर जन्मभूमि के रक्षार्थ सत्रह दिनों तक घोर संग्राम किया और समस्त सेना सहित युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। आपके मर जाने पर ही मीरबाँकी मन्दिर गिराने में सफल हुआ। इस युद्ध में बाबर की साढ़े चार लाख सेना से आपके एक लाख चौहत्तर हजार सैनिकों ने लोहा लिया था, जिसमें बाबर के केवल ३१४३ सैनिक जीवित बचे थे।

राजकुमार सिंह–

आप सुलतानपुर जिले के मुसाफिरखाना तहसील के पास पीपरपुर गाँव के रहने वाले थे। आपने समस्त अवध के राजाओं को संगठित करके जन्मभूमि के रक्षार्थं घोर संग्राम किया था और युद्ध में मारे गये थे।

देवीदीन पाण्डेय—

आप सनेथू ग्राम के पास जो सूर्यकुण्ड से ३ मील पूर्व है ईश्वरीय पाण्डेय के पुरवा नामक ग्राम के निवासी थे। अयोध्या के समीपस्थ सभी सूर्यवंशीय क्षत्रियों के आप पुरोहित भी थे और भरद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण थे। उस प्रदेश के समस्त सूर्य वंशीय क्षत्रियों को संगठित करके आपने जन्मभूमि के उद्धारार्थ घोर संग्राम किया था। मीरबाँकी के एक अंगरक्षक के लाहौरी ईंट फेंक कर मारने से चोट लगकर आपकी खोपड़ी चकनाचूर हो गई तो अपनी पगड़ी से उसे कसकर आपने बाँध लिया और उस अंगरक्षक का सिर काट कर मीरबाँकी के सिर पर तलवार का प्रहार किया। मीरबाँकी तो हौदे में छिपकर बच गया, किन्तु महावत और हाथी दोनों मर गये। अन्त में मीरबाँकी की गोली से घोड़े सहित आपकी मृत्यु हो गई। आपके वंशज अभी उक्त ग्राम और अयोध्या में मौजूद हैं।

राजा मानसिंह—

आप अयोध्या नरेश थे। आपके प्रयत्न से नवाब वाजिद अली के समय चबूतरे और खस की टट्टियों के रूप में मन्दिर का निर्माण हुआ।

रानी जयराज कुमारी—

आप हंसवर की महारानी थीं २१ वर्ष की अवस्था में ही तीन सहस्र नारियों की सेना लेकर आपने हुमायूँ की सेना का सामना किया था और जन्मभूमि के उद्धारार्थ अपने प्राण विसर्जन किये थे। आप अनुपम सुन्दरी थीं।

राजकुमार जयदत्त सिंह--

आप भीटी के राजकुमार थे, आपने जन्मभूमि के उद्धारार्थ मौलवी अमीर अली नामक एक साम्प्रदायिक मुसलमान जो जेहाद की इच्छा से आया था, घोर संग्राम करके उसके हाथ से जन्मभूमि का उद्धार किया था। आपके युद्ध का वर्णन करते हुये कवीन्द्र श्री लक्ष्मणदास जी लिखते हैं --

सवध विगारन हेतु जब, यवन जुरे बहु आय।
छाँड़ि यात्तरा कर लियो, कीन्हों समर सुभाय॥
कुश पैंती कर छाड़ि लिये, खड़ग भवानी दत्त।
अली अमीरे सों भिरय्यो, समर-सूर जयदत्त॥

❀ कवित्त ❀

जम के पठाए जौन आये जंग करिबे को,
ताको तंग महावीर भली भाँति कीनी है।
तोरि दीन्हों खोपरी मरोर दीन्हों हाथ पाँव,
छीन लीन्हों अस्त्र-शस्त्र करत नवनो है॥
भाषत 'कवीन्द्र' भीर भई गर्ग वंशिन की,
बांके रघुवंशी नागे खड़ग हाथ लीनो है।
काट के मलिच्छन को डारयो खरिहान ऐसो,
राम के विरोध को मजो चखाया दीनो है॥

कुँवर गोपालसिंह और ठाकुर जगदम्बा सिंह--

अयोध्या के समीपस्थ ग्राम राजेपुर और सिरसिण्डा के यह दोनों

निवासी थे। सूर्यवंशी क्षत्रियों को संगठित करके जन्मभूमि पर युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे।

ठाकुर रणविजयसिंह --

आप हंसवर राज्य के राजा और रानी जयराजकुमारी के पति थे। आपने जन्मभूमि के रक्षार्थ बाबर की सेना से घोर संग्राम किया था और युद्ध में मारे गये थे।

बाबरी मस्जिद में प्राचीन मंदिर के चिह्न

हम ऊपर लिख चुके हैं कि बाबर ने मस्जिद बनने के समय दीवार अपने आप लगातार गिरते रहने के कारण हिन्दू महात्माओं को बुलाकर उनसे प्रार्थना की, कि मस्जिद कैसे बने? शाह साहब अपनी हठ नहीं छोड़ रहे हैं। इस पर हिन्दू महात्माओं ने जो आदेश दिया उसके अनुसार बाबर ने निम्नलिखित परिवर्तन मस्जिद में किये जिससे मस्जिद बन सकी। वे परिवर्तन जो हिन्दू महात्माओं की आज्ञा से बाबर ने किए उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

मीनारें--

प्रायः देखा गया कि सभी मस्जिदों में मीनार का होना बहुत आवश्यक है। मे मीनारें विशाल मस्जिदों में अजान देने के लिए बनाई जाती हैं जिसके ऊपर चढ़कर मस्जिद का मुल्ला नमाज के समय उक्त समय की घोषणा करता है उसकी उस अजान की घोषणा को सुनकर खुदा के बन्दे नमाज अदा करने के लिये मस्जिद में इकट्ठे हो जाते हैं। अतएव मस्जिदों में मीनार का होना शरियत के मुताबिक बहुत आवश्यक माना गया है। बाबरी मसजिद में कोई मीनार नहीं है।

श्रीरामजन्मभूमिः—
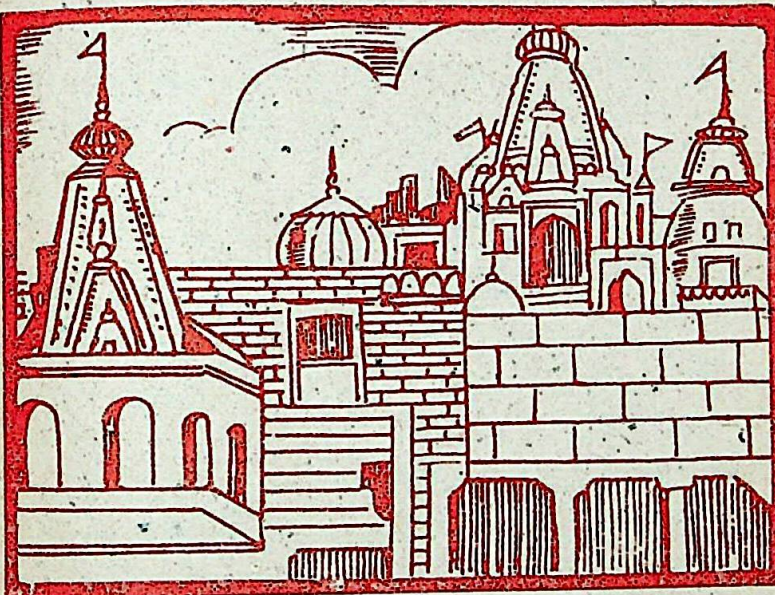
श्री सम्राट विक्रमादित्य द्वारा निर्मित (जीर्णोद्धार किए गए) श्रीरामजन्मभूमि का वह मंदिर जिसे मुगल सम्राट बाबर के वज़ीर मीरबाकी खाँ ताशकन्दी ने तोपों की मार से विध्वंस्त करके उसी स्थान पर उसी के अवशेष मसाले से बाबरी मसजिद का निर्माण कराया था जिसके उद्धार के लिये हिन्दुओं द्वारा ७६ आक्रमण समय-समय पर किए गए

कुआँ–

प्रत्येक मस्जिदों में कुआं होना बहुत ही आवश्यक है, क्योंकि उसके जल लेकर वजू किया जाता है तब नमाज पढ़ी जाती है। बाबरी मस्जिद में कुआँ नहीं है। आसपास भी कोई कुआँ ऐसा नहीं है जिससे मुसलमान पानी भर सकते हों

परिक्रमा–

किसी मस्जिद में परिक्रमा नहीं होती। बाबरी मस्जिद के चारों ओर पक्की परिक्रमा बनी हुई है जो प्राचीन मन्दिर के ध्वंश के पूर्व से उपस्थित थी। यह मन्दिर का पुष्ट प्रमाण उपस्थित करती है।

मूर्तियाँ–

किसी मस्जिद में बुतों (मूर्तियों) का होना शरियत की दृष्टि से नाजायज करार दिया गया है। बाबरी मस्जिद में जो प्राचीन मन्दिर के १२ कसौटी के स्तम्भ लगे हुए हैं उन पर भगवान शंकर के ताण्डव-नृत्य भगवान कृष्ण श्री हनुमान जी आदि की प्रतिमायें अभी तक बनी हैं। किसी किसी स्तम्भ पर महाराज अनरण्य आदि की प्रशस्ति के ध्वंश चिह्न भी पाये जाते हैं।

झरोखी तथा सिंहपौरि–

प्राचीन हिन्दू मन्दिरों में झरोखें (सिंह पौरि) होती हैं। यह झरोखी जंगलेदार फाटक के दोनों ओर बनी होती हैं। बाबरी मस्जिद में भी इस नियम का पालन किया गया है और छोटी छोटी

दो झरोखियाँ बनी हैं जो इस्लामी शरियत के अनुसार किसी मस्जिद में नहीं होनी चाहिए।

मस्जिद में लकड़ी नहीं होती–

इस्लामी शरियत के अनुसार मस्जिद में लकड़ी कहीं भी नहीं लगनी चाहिए। बाबरी मस्जिद के निचले गुम्बद वाले द्वार में चन्दन की एक लकड़ी लोहे के दो गाटरों के बीच में लगा कर मन्दिर के नियम का पालन किया गया है।

सीता पाकस्थान–

मस्जिद के मुख्य द्वार पर लिखित बाबर की प्रशस्ति के ऊपर दो गोल छोटे-छोटे चक्र बनाये गये हैं, जिनके नीचे एक बड़ा गोल चक्र है। इन तीनों गोल चक्रों के बीच में पर्सियन भाषा में अल्ला लिखा हुआ है और घड़ी में सूइयों के द्वारा मिनट की ज़ानकारी के लिए जिस प्रकार मिनटों के चिह्न बने होते हैं उसी प्रकार अल्ला के अलग-अलग घेरे में मुड़िया भाषा और पर्सियन भाषा में सीता पाकस्थान लिखा हुआ है।

उपर्युक्त हिन्दू चिह्नों के रहने का प्रमाण–

मस्जिद की दीवारें आप से आप जब एक मास तक गिरती रहीं तो मीरबाकी के पत्र लिखने पर बाबर आया। उसने हिन्दू महात्माओं को बुलाकर मस्जिद कैसे बने यह पूछा महात्माओं ने जब यह जाना कि यह बिना मस्जिद बनवाये मानेगा नहीं और मन्दिर तो ध्वंश कर ही दिया तब

जो कुछ हिन्दू चिह्न शेष हैं उन्हें ही सुरक्षित रक्खा जाय। यह विचार कर बाबर से कहा कि मस्जिद के नाम से इसे श्री हनुमानजी बनने नहीं देंगे इसका नाम सीता पाकस्थान रखिए। इसे मस्जिद का रूप न दीजिए, परिक्रमा रहने दीजिये तथा हिन्दू महात्माओं को भी इसमें भजन पाठ आदि करने की स्वतन्त्रता दीजिए तब यह मस्जिद बन सकती है।

बाबर यह बात मान गया उसने मस्जिद के अगल बगल स्थित मीनारें गिरवा दीं। द्वार पर लकड़ी लगाकर एक प्रकार से उसे मस्जिद के रूप से बेकार कर दिया। दो झरोखियाँ भी छोटी-छोटी सी बनवा दी। मुड़िया और पर्सियन भाषा में सीता पाकस्थान भी द्वार पर लिखवा दिया और मुसलमानों के लिए केवल जुम्मे (शुक्र) के दिन नमाज पढ़ने तथा हिन्दुओं को सभी दिन स्वच्छता पूर्वक भजन पाठ करने की स्वतन्त्रता दे दी तब जाकर यह मस्जिद तैयार हो सकी। तुजुक बाबरी में एक स्थान पर बाबर स्वयं लिखता है कि—

मीरबाँकी ने मेरे पास खत लिखा कि अयोध्या के राम जन्मभूमि मन्दिर को मिसमार करके जो मस्जिद तामीर की जा रही है उसकी दीवारें खुद गिर पड़ती हैं। दिन भर में जितनी दीवार तामीर होती है शाम को वह अपने आप गिर पड़ती है। इस पर मैंने खुद वहाँ जाकर सारी बातें अपनी आँखों से देखकर चन्द हिन्दू औलिया फकीरों को बुलाकर यह मसला उनके सामने रक्खा। इस पर उन लोगों ने

कई दिनों तक गौर करने के बाद मुझे मस्जिद में चन्द तरमी[illegible] कराने की राय दी जिनमें ५ बातें खास थीं, यानी मस्जिद [illegible] नाम सीता पाक रक्खा जाय, परिक्रमा रहने दी जाय, स[illegible] गुम्बद के दरवाजे में लकड़ी लगा दी जाय, मीनारें गिरा [illegible] जायें और हिन्दू महात्माओं को भजन पाठ करने दिया जाय[illegible] उनकी इस राय को मैंने मान लिया तब मस्जिद तैयार [illegible] सकी।'

'तुजुक बाबरी पृष्ठ ५[illegible]

तात्पर्य यह कि उपर्युक्त हिन्दू चिह्न रखकर बाबर ने हमा[illegible] ऊपर कोई कृपा नहीं की बल्कि विवश होकर उन चिह्नों को [illegible] सुरक्षित रखना ही पड़ा, क्योंकि यदि वह ऐसा न करता तो मस्जि[illegible] का बनना केवल मन की हवाई कल्पना मात्र थी। इसीलि[illegible] इस असंभव को संभव करने के लिए बाबर को हिन्दू महात्माओं [illegible] चरणों में गिरकर आत्मसमर्पण करना पड़ा तब जाकर उनके आशीर्वा[illegible] से कहीं वह अपने इस उद्देश्य में सफल हो सका और बाबरी मस्जि[illegible] बन सकी।

शाही शासन में अयोध्या को हड़प लेने की कुचेष्टा और सफलता

शाही शासन काल में, भगवान श्रीराम की जन्मभू[illegible] श्री अयोध्या जी को हड़प जाने के लिए भीषण कुचक्र रचे [illegible] इसका नाम मिटा देने के लिए बगल में फैजाबाद आब[illegible]

किया गया और यवनों ने लखनऊ को छोड़कर यहीं अपनी राजधानी बनाई। अयोध्या को खुदा मक्का और सहस्र कवियों का पाक निवास सिद्ध करने के लिये उर्दू शायरों ने न जाने कितनी मशनविया गढ़ीं। प्रत्येक अयोध्या के मुहल्ले के बगल में एक मुसलमानी मुहल्ला बसाया गया' किन्तु मुगल साम्राज्य के समाप्त होते ही वे मुहल्ले भी समाप्त हो गये। यह उर्दू की शायरी भी जहाँ की तहाँ चली गई, और राम की अयोध्या उसी प्रकार मुस्कराती रही। आज भी केवल पुराने कागजातों में उन मुहल्लों के नाम पाये जाते हैं प्रत्यक्ष में उन्हें कोई जानता ही नहीं अब हम क्रम से अयोध्या के प्राचीन मुहल्ले और उनका शाही रूपान्तर लिखते हैं। पाठक समझ लें।

प्राचीन मुहल्ले	शाही रूपान्तर
स्वर्गद्वार—	सैदवाड़ा
रामकोट—	बेगमपुरा
वशिष्ठिकुण्ड—	कजियाना
शृंगारहाट—	नौगजी
प्रमोदवन—	बाग हयात बख्श
रसालवन—	बाग फरहत बख्श
मीरापुर—	डेराबीबी
सप्तसागर—	इटउव्वा
चम्पक वन—	बाग रहीम बेग

तमालबन—	बाग मिर्जाअलावाग
राजद्वार—	रहमान गंज
पापमोचनघाट—	गोडियाना आबपाशी
मणिपर्वत—	शीश पैगम्बर
यमस्थल—	हसनू कटरा
गुप्तारघाट—	सिहादत गंज
मान्धाता नगर—	मुशाहव गंज
रघुवीर नगर—	राय गंज
कुंजगली—	टेढ़ी बाजार
त्रेतानाथ—	उर्दू बाजार
ऋणमोचनघाट—	फकीराबाद
अयोध्याघाट—	फकीराबाद
कौशिल्याघाट—	बेगम जट्टूर की डेवढ़ी
तुलसी बाग (तुलसी बाड़ी)	खजूर गंज
रामघाट—	रहीमाबाद
जानकीघाट—	अख्तर गंज
लक्ष्मणघाट—	ख्वाजा हसन इमाम की डेवढ़ी
मत्तगजेन्द्र—	पीरमात गंड
बिशाख वन—	औलियाबाद
चक्रतीर्थ—	इस्लामाबाद,
वासुदेवघाट—	अंगूरी बाग
कैकेईघाट—	जीनत मंजिल

सुमित्राघाट—	अख्तर मंजिल
वृहस्पति कुण्ड —	बाग बिजैसर
बिभीषण कुण्ड—	सुतहटी
स्वर्णखनि —	सुलेमानबाग
सरयूबाग—	आबेहयात बाग
नागकेसर बन—	मस्ताब बाग

हिन्दुओं के ७६ आक्रमणों का विस्तृत विवरण—

बाबर के समय ४ आक्रमण—

राजा महताब सिंह का पहला आक्रमण—

बाबर के समय में मस्जिद के निर्माण के समय से लेकर उसकी मृत्यु तक जन्मभमि को पुनः प्राप्त करने के लिए ४ आक्रमण हुए। प्रथम आक्रमण भीटी के महाराज महताब सिंह द्वारा हुआ था। जिस समय मन्दिर को भूमिसात करके मस्जिद बना देने की घोषणा हुई उस समय हिन्दुओं में एक प्रकार के क्रोध और लोभ की लहर फैल गई। उसी समय भीटी के महाराज महताब सिंह बद्रीनारायण की यात्रा करने के लिये निकले थे। अयोध्या पहुँचने पर जब उन्हें यह दुखद सम्वाद विदित हुआ तो उन्होंने बद्रीनारायण की यात्रा स्थगित कर दी और अपने साथियों से कहा कि अब हमें स्वर्ग की यात्रा

"हालात गुमस्ता अयोध्या से उद्धृत"

कन्दी ही और अपने आदमियों को चारों ओर भेजकर प्रातः काल होते-होते १ लख ७४ हजार आदमी तैयार कर लिया तथा १७ दिनों तक जन्मभूमि के रक्षार्थ घोर संग्राम किया और अपने समस्त साथियों एवं सैनिकों के सहित युद्ध में मारे गये। इस युद्ध में आपके एक लाख चौहत्तर हजार सैनिकों का बाबर के ४ लाख ५० हजार सैनिकों का सामना हुआ जिसमें बाबर के केवल तीन हजार एक सौ पैंतालिस सैनिक जीवित बचे और राजा महताब सिंह का कोई भी व्यक्ति जीवित नहीं बचा, इतनी लाशों के ढेर लग जाने के पश्चात् ही बाबर का वजीर मीरबाँकी खाँ ताशकन्दी तोप लगाकर मन्दिर गिरा सका।

देवीदीन पाण्डेय द्वारा द्वितीय आक्रमण–

राजा महताब सिंह की मृत्यु के बाद मन्दिर तोपों की मार से विध्वस्त कर दिया गया और उसी के मसाले से मसजिद का निर्माण आरम्भ हुआ। उस समय अयोध्या से पूर्व छ मील की दूरी पर सनेथू नाम का एक ग्राम है वहाँ के निवासी प० देवीदीन पाण्डेय ने वहीं के सराय, सिरसिण्डा, राजेपुर आदि ग्रामों के सूर्य वंशीय क्षत्रियों को एकत्रित करके कहा कि भाइयो आप लोग मुझे अपना पूज्य पुरोहित मानते हैं। आपके पूर्वज भगवान श्रीराम ने हमारे पूर्वज महर्षि श्री भरद्वाज जी से प्रयाग में दीक्षा ग्रहण की थी अश्वमेध में हमें १० हजार बीघे का रामपुर द्वेग्राम नामक ग्राम दक्षिणा में दिया गया था। अतः भगवान श्री राम की जन्मभूमि खोद

डाली जाय और हम लोग जीवित रहें इससे तो मर जाना ही अच्छा है।

आपकी आज्ञा से दो दिन के भीतर ९० हजार क्षत्रिय इकट्ठे हो गये। दूर-दूर के ग्रामों से झुण्ड के झुण्ड क्षत्रियों ने आकर देवीदीन पाण्डेय के नेतृत्व में जन्मभूमि पर जबरदस्त धावा बोल दिया। इस एकाएक होने वाले आक्रमण से मीरबाँकी घबरा उठा शाही सेना से ५ दिनों तक लगातार घोर संग्राम हुआ। छठें दिन मीरबाँकी के एक अंगरक्षक की फेंकी हुई लखावड़ी ईंट पाण्डेय जी की खोपड़ी में आकर लगी जिससे उनकी खोपड़ी चकनाचूर हो गई। आपने उसे कसकर अपनी पगड़ी से बाँध लिया, और तलवार से उस अंगरक्षक का सिर काटकर मीरबाँकी के हौदे पर अपने घोड़े सहित आक्रमण किया। मीरबाँकी तो हौदे में छिप कर बच गया किन्तु आपकी तलवार के वार से महावत सहित हाथी मर गया। बीच में मीरबाँकी ने बन्दूक छोड़ी जिसकी गोली से घोड़े सहित आपकी मृत्यु हो गई। आपकी अन्तिम इच्छानुसार बिल्वहरि घाट पर आपकी लाश का संस्कार किया गया। आपका यह आक्रमण ३ जून सन् १५२८ को हुआ था और आपकी मृत्यु दो बजे दिन ता० ९ जून सन् १५२८ को हुई थी। आपके वंशज उक्त सनेथू ग्राम के ईश्वरी पाण्डेय का पुरवा नामक मौजे में अब भी मौजूद हैं इन पंक्तियों का लेखक भी उन्हीं का वंशज है।

बाबर तुजुक बाबरी में लिखता है—

जन्मभूमि को शाही अख्तियारातों से बाहर करने के लिए जो ४ हमले हुए उनमें सबसे बड़ा हमलावर देवीदीन पाण्डेय था। इस शख्स ने एक दिन में सिर्फ ३ घण्टे के भीतर गोलियों की बौछार के रहते हुए भी शाही फौज के सात सौ आदमियों का कत्ल किया। एक सिपाही की ईंट से इसकी खोपड़ी चकनाचूर हो जाने के बावजूद भी वह उसे अपनी पगड़ी के कपड़े से बाँध कर इस कदर लड़ता गया जैसे किसी बारूद की थैली में पलीता लगा दिया गया हो। आखिर में वजीर मीरबाँकी की गोली से इसकी मौत हुई।

तुजुक बाबरी पृष्ठ ५४०

हँसवर के राजा रणविजय सिंह द्वारा तीसरा आक्रमण—

देवीदीन पाण्डेय की मृत्यु के १५ दिन बाद हँसवर के महाराज रणविजय सिंह द्वारा बाबरी मस्जिद पर तीसरा आक्रमण हुआ। उक्त महाराज की २५ हजार सेना ने डँटकर मीरबाँकी से लोहा लिया और १० दिन तक युद्ध करके महाराज अपनी सेना सहित वीरगति को प्राप्त हो गए।

रानी जयराज कुमारी द्वारा चौथा आक्रमण—

रानी जयराज कुमारी हँसवर के स्वर्गीय महाराज रणविजय सिंह की पत्नी थी। महाराज की मृत्यु के बाद उनके

१—तवारीखे अवध से उद्धृत

कार्य को पूर्ण करने का आपने बीड़ा उठाया और तीन हजार नारियों की सेना लेकर आपने जन्मभूमि पर आक्रमण कर दिया। बाबर के अपार सैन्य सागर के सामने यद्यपि आप सफल नहीं हो सकीं किन्तु आपका गौरिल्ला युद्ध हुमायूँ के समय तक जारी रहा। हुमायूँ के समय आपने दस आक्रमण जन्मभूमि के उद्धारार्थ किये। दसवें आक्रमण में आपने शाही सेना के धुर्रे उड़ा कर जन्म-भूमि पर आक्रमण करके उसे अपने अधिकार में कर लिया, किन्तु एक मास के बाद नई शाही सेना ने आकर आपके हाथ से जन्म-भूमि छीन लिया। इसी युद्ध में आप लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुईं। आपकी सैनिकों द्वारा सहायता करने वाले सन्यासी स्वामी महेश्वरानन्द जी भी जो आपके गुरु थे लड़ते हुए इसी युद्ध में अपनी सेना सहित मारे गए थे।

श्री स्वामी बलरामाचारी द्वारा २० आक्रमण–

रानी जयराज कुमारी तथा स्वामी महेश्वरानन्द जी की मृत्यु के पश्चात् युद्ध का नेतृत्व श्री स्वामी बलरामाचारी जी ने अपने हाथ में लिया। आपने देहातों में घूम-घूम कर हिन्दुओं की एक जबरदस्त सैन्य तैयार की और जन्मभूमि के उद्धारार्थ २० आक्रमण किये। प्रत्येक आक्रमणों में आप सफल होते थे और जन्मभूमि पर अधिकार कर लेते थे। किन्तु यह सफलता आपकी चिरस्थायी नहीं होती थी। कुछ समय के बाद शाही सेना आपके हाथ से जन्मभूमि छीन लेती

थी। बीसवां आक्रमण आपका अत्यन्त प्रबल था। आपकी वीरता से अकबर भी प्रभावित हो गया और बीरबल तथा टोडरमल के कहने से बाबरी मस्जिद के सामने एक चबूतरा जो जबरदस्ती लड़कर श्री स्वामी जी नें बनवा दिया था उस पर एक छोटा सा मन्दिर बना लेने की आज्ञा दे दी और उसी आज्ञा के फलस्वरूप खस की टट्टियों का एक तीन फिट का छोटा सा मन्दिर बनकर तैयार हुआ। प्रयाग कुम्भ के अवसर पर त्रिवेणी तट पर आपकी मृत्यु हो गई। इस तरह से स्वामी महेश्वरानन्द और रानी जयराज कुमारी की अन्तिम इच्छा से जो आपने उनका कार्यभार ग्रहण करके पूरी करने प्रतिज्ञा की थी, उसका उपसंहार हुआ।

दरबारे अकबरी में अकबर लिखता है—

सुल्ताने हिन्द बादशाह हुमायूं के वक्त में सन्यासी स्वामी महेश्वरानन्द और रानी जयराज कुमारी दोनों अयोध्या के आस-पास के हिन्दुओं को इकट्ठा करके लगातार दस हमले करते रहे। रानी जयराज कुमारी ने ३ हजार औरतों की फौज लेकर बाबरी मस्जिद पर आखिरी हमला करके कामयाबी हासिल की थी मगर वजीर फैजी के हमराह जाने वाली शाही फौज ने रानी के हाथ से फिर बाबरी मस्जिद वापस ले ली। इस लड़ाई में बड़ी खूंखार लड़ाई लड़ती हुई रानी जयराज कुमारी मारी गईं और स्वामी महेश्वरानन्द भी अपने सब साथियों के साथ लड़ते खेत रहा—

दरबारे अकबरी पृष्ठ ३०१

बाबा वैष्णवदास के नेतृत्व में ३० आक्रमण–

औरङ्गजेब के समय बाबा श्री वैष्णवदास जी ने ३० आक्रमण जन्मभूमि के उद्धारार्थ किए। आपके आक्रमणों में सराय, सिर-सिण्डा, राजेपुर, नारे, सनेथू, पूरे पहलवान आदि ग्रामों के जो कि अयोध्या के पूर्व की ओर आबाद हैं। सूर्य्य वंशी क्षत्रियों ने पूर्ण सहयोग दिया था। उपर्युक्त ग्रामों में सराय के ठाकुर सरदार गजराज सिंह और राजेपुर तथा सिरसिण्डा के कुँवर गोपाल सिंह और ठाकुर जगदम्बा सिंह ने बड़ी बहादुरी से युद्ध किया था और शाही सेना से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे।

गुरु गोविन्द सिंह का आक्रमण–

सन् १६८० में गुरु गोविन्द सिंह के नेतृत्व में सिक्खों की सेना ने फैजाबाद के पास वर्तमान सआदतगंज में बाबा वैष्णव-दास एवं सूर्य वंशीय क्षत्रियों की संगठित सैन्य के साथ मिलकर शाही सेना से विकट संग्राम किया था जिसमें शाही सेना की जबरदस्त हार हुई थी। इस युद्ध में मुगल सेनापति सरदार हसनअली खाँ जान से मारे गये थे। गुरु गोविन्द सिंह बाबा वैष्णवदास का पत्र पाकर आगरे के पास मुगलों से लड़ना छोड़ कर उनकी सहायता के लिए आये थे और ब्रह्मकुण्ड पर अपना अड्डा जमाया था, जिसका प्रतीक सिक्खों का गुरुद्वारा आज भी ब्रह्मकुण्ड पर मौजूद है।

अपने आलमगीरनामे में औरङ्गजेब लिखता है—

बाबरी मस्जिद के लिए काफिरों ने ३० हमले किये सब में लापरवाही की वजह से शाही फौज ने शिकस्त खाई आखिरी हमला जो गुरु गोविन्द सिंह के साथ बाबा वैष्णवदास का हुआ उसमें शाही फौज का बड़ा नुकसान हुआ इस लड़ाई में से हजारी मनसबदार सरदार हसनअली खाँ भी मारे गये।

आलमगीरनामा पृष्ठ ६२३

आगे चलकर औरंगजेब फिर लिखता है—

'लगातार चार बरस तक चुप रहने के बाद रमजान की २५वीं तारीख को शाही फौज ने फिर अयोध्या की जन्मभूमि पर हमला किया। इस अचानक हमले में दस हजार हिन्दू मारे गये। उनका चबूतरा और मन्दिर खोदकर जमीदोज कर दिया गया इस वक्त तक वही शाही देख-रेख में है।

आलमगीरनामा पृष्ठ ६३०

नवाब सआदतअली के समय ५ आक्रमण—

राजा गुरुदत्त सिंह अमेठी और राजकुमार सिंह पिपरापुर के नेतृत्व में बाबरी मस्जिद पर पुनः अधिकार कर लेने के लिए हिन्दुओं के ५ आक्रमण हुए इस समय तक हिन्दू मुसलमानों ने संगठित रूप से युद्ध किए हिन्दुओं की क्षणिक विजय हुई, किन्तु बाबरी मस्जिद पर उनका पूर्ण रूपेण अधिकार नहीं हो सका। यह आक्रमण प्रति वर्ष लगातार ५० वर्षों

तक होते रहे। झगड़े से आजिज आकर नवाब ने बाबर के समय की भाँति एक ही स्थान पर हिन्दू और मुसलमानों की मस्जिद में पूजा पाठ और नमाज पढ़ने की आज्ञा दे दी तब जाकर यह झगड़ा शान्त हुआ।

कर्नल हण्ट लिखता है--

लगातार हिन्दुओं के हमलों से ऊबकर नवाव ने हिन्दुओं की और मुसलमानों को एक साथ नमाज पढ़ने और भजन पाठ करने की इजाजत देदी। तब यह झगड़ा कुछ शान्त हुआ। नवाब सआदतअली के लखनऊ की मशनद पर बैठने से लेकर ५ वर्ष लगातार हिन्दुओं के बाबरी मस्जिद पर दखलयाबीहासिल करने के लिए ५ हमले हुए।

लखनऊ गजेटियर पृष्ठ ६२

नासिरुद्दीन हैदर के समय में ३ आक्रमण--

मकहरी के राजा के नेतृत्व में जन्मभूमि को पुनः असली रूप देने के लिए हिन्दुओं के तीन आक्रमण हुए किन्तु इसमें हिन्दुओं को सफलता नहीं मिली। अन्तिम आक्रमण में हिन्दुओं की विजय तो हुई किन्तु ३ दिन के बाद शाही सेना ने इनके हाथों से छीनकर पुनः जन्मभूमि को अपने अधिकार में कर लिया।

"जन्मभूमि पर अपना अधिकार करने के लिए नवाब नासिरुद्दीन हैदर के समय में मकरही के ताल्लुकदार के समय हिन्दुओं की

एक जबरदस्त भीड़ ने ३ बार हमला किया मगर कामयाब नहीं हो सकी आखिरी हमले में शाही सेना के पाँव उखड़ गये और वह मैदान से भाग खड़ी हुई किन्तु तीसरे दिन आने वाली जबरदस्त शाही कुमक से लड़कर हिन्दू बुरी तरह हार गये और उनके हाथ से जन्मभूमि निकल गई।

नवाब वाजिदअली के समय दो आक्रमण—

राजा देवीबख्श सिंह गोंडा नरेश तथा अन्य अवध के समस्त राजाओं के नेतृत्व में जन्मभूमि के उद्धारार्थ दो आक्रमण हुए जिनमें अन्ततः हिन्दुओं की विजय हुई और हिन्दुओं ने अपना वर्षों का स्वप्न पूरा किया अर्थात् औरङ्गजेब द्वारा विध्वंश किये गये चबूतरे को फिर से बनवा लिया जिस पर एक छोटा सा मन्दिर बना लेने की आज्ञा महाराज मानसिंह एवं टिकैतराय के प्रयत्न से नवाब ने दे दी और फूस की झोपड़ी के रूप में एक छोटा सा मन्दिर बनकर तैयार हुआ, किन्तु कुछ तास्सुबी मुल्लाओं को यह बात भी खटकी उन्होंने जाकर बाद में इसकी शिकायत की तो बुद्धिमान नवाब ने हँसकर जवाब दिया।

हम इश्क के बन्दे हैं मजहब से नहीं वाकिफ।
कावा हुआ तो क्या बुतखाना हुआ तो क्या॥

नवाब के इस निर्णय की अंग्रेजों ने भी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की थी।

मौलवी अमीरअली द्वारा जेहाद—

नवाब के उक्त निर्णय पर अमेठी राज्य के मीर मौला अमीरअली नामक मुसलमान ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर जेहाद करने के लिए कुछ मुसलमानों का जबरदस्त दल लेकर जन्मभूमि पर आक्रमण करने के लिए प्रस्थान किया, किन्तु भीटी के राजकुमार जयदत्त सिंह ने रौनाही के पास ही रोक कर घोर संग्राम कर सेना सहित समाप्त कर दिया।

मदीनतुल औलिया में लिखा है—

मौलवी साहब ने जुमा की नमाज पढ़ी तकरीबन १७० आदमी जेहाद में लेकर रवाना हुए।

सन् १२७१ हिजरी से ३२७२ हिजरी तक बाकायदा मौकि हुअ जेहाद का नाम सुनकर सैकड़ों मुसलमान शरीकन जेहाद हुई··तकरीबन दो हजार जमैत होगी जो रौनाही के पास जंग करते हुए शहीद हुए।

मदीनतुल औलिया पृष्ठ ३५

इस प्रकार जन्मभूमि का इतिहास अपने पृष्ठों को ७६ बार रक्तरंजित करता रहा उसका रक्त कभी ठण्डा नहीं पड़ा।
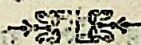
जन्मभूमि के युद्धों पर तत्कालीन प्राचीन कवियों की कविताएँ

जन्मभूमि के सम्बन्ध में जितने भी युद्ध हुए हैं उनका विस्तृत विवरण यद्यपि आजकल नहीं मिलता कारण यह है कि हिन्दू जाति उस समय पराधीन थी। किसी जाति का पराधीन होना अभिशाप है। यही कारण है कि तत्कालीन शासकों ने उस समय के इतिहास नष्ट करा दिये ऊपर लिखे जो कुछ प्रमाण हमें उपलब्ध हुए हैं वे तत्कालीन शासकों और विदेशियों के लेखों द्वारा दिये गये हैं। उपर्युक्त लेखकों ने इन युद्धों के वर्णनों को बहुत साधारण ढंग से लिख दिया है क्योंकि हिन्दुओं का उपद्रव और उनकी वीरता का वर्णन करके उनके गौरव का वर्णन करना अभीष्ट तो था नहीं, किन्तु फिर भी तत्कालीन कवि इससे उदासीन नहीं रहे। नियमानुसार वे इसका विशद वर्णन अपनी ओजस्वी कविता में करते रहे। हम इस सम्बन्ध में ऐसे ही कुछ कवियों की रचनाओं का उद्धरण देंगे. देवीदीन पांडे का जो मीरबांकी से घोर युद्ध हुआ था इस युद्ध का विशद वर्णन करते हुए तत्कालीन कवि श्री जसवन्त ने छन्द लिखे थे जो हमें सनेथू निवासी अपने मित्र श्री गजानन्द सिंह चौहान द्वारा प्राप्त हुए हैं। स्थानाभाव से हम कुछ ही छन्दों का उद्धरण दे रहे हैं, पाठक उन्हें पढ़कर उस समय के भयंकर संग्राम का पता लगा सकते हैं। यह बात ध्यान रखना आवश्यक है कि भारत उस समय पराधीन था हिन्दू गुलाम थे। शाही सेना सर्वसत्ता और शक्ति सपन्न थी। देवीदीन पांडे ने अयोध्या के समीपवर्ती

क्षत्रियों को संगठित करके शाही सेना से लोहा लिया था। वे कोई स्वतन्त्र सत्ताधारी राजा न होकर एक साधारण भिक्षुक ब्राह्मण थे। कवि जसवन्त अपनी कविता में तत्कालीन युद्ध का वर्णन करते हुए लिखता है—

घनाक्षरी

काटि काटि फल्ला से दुपल्ला भमि डारि दीन्हें,
मानो मीचु आप ही भई है रूप खाँड़े की।
अल्ला अल्ला बोलि के प्रसल्ला करै हल्ला लागे।
राहुधारी भगि के गोशाईगंज टाँड़े की।
खोलि फेंकि लुंगी औ लगाय के तिलक भाल,
रोय हाथ जोरि लागे मांगे भीख छाँड़े की।
फलबी रन भूमि झूल जब्बी भई हिन्दुन की,
देखिके जुनब्बी जोर देवीदीन पाँडे की।

आगे चलकर यही कवि मीरबाँकी पर देवीदीन पाण्डेय द्वारा किए गये आक्रमण का चित्र अपनी लेखनी से खींचता हुआ लिखता है—

ईंट के लागत ही चटकि खोपरी जो गई,
बाँधि फर सफासों तुरन्त वीर हँसिगो।
आसँ जसवन्त टाप घोड़ा की अड़ायदन्त।
सिन्धुर के शीश को कसौटी जानो कसिगो॥
भयभीत हौदा में लुकान्यो जाय मीर बाँकी,
खींचि खड्ग म्यान सों तुरन्त तोम तसिगो।
सुण्ड काटि मुण्ड काटि और लौह कुण्ड काटि,
काटि फीलवान को जमी में जाय धँसिगो॥

हुमायूँ की सैन्य से रानी जयराज कुमारी के युद्ध का वर्णन करते हुए उपर्युक्त कवि लिखता है—

चम्म चम्म चमकि चमूमे चंचला सी चारु,
रुधिर तरंगिनी में चावसों तिरै लागी।
रन भूमि नभ में घुमण्डि अँधियारा रूप,
घोर घन माला ज्यों घटान सी घिरै लागी।।
लाली सो कराल महाकाली ह्वै निकारि जीभ,
लप्प लप्प लपकि भुजंगिनि भिरै लागी।
छत्ता से मुकत्तादार डाढ़ी वारे शीशन पै,
रानी जयराज की जुनब्बी यों फिरै लागी।।

औरंगजेब के समय के युद्ध का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है—

होरी खेलें रघुवीरा अवध में होली खेलें रघुवीरा।
बन्धु सखा सब पिचुका मारैं पहिने कुसुमी चीरा।।

अवध में—

सुनो खुसुर जी बात पुरानी एक दिन ऐसा आया था।
गढ़ी मढ़ी संकट के हुत्तने सबका दिल बहलाया था।।
अवध नगर के सूबा जी को खुद मुख्तारी की सूझी।
साहि तखत की हवस समायी उमरा बजरा से बूझी।।
चण्डू मियाँ घमण्डी सैय्यद खूब ही वाह वाह लूटी।
पौ बारह इनका पासा था उनकी किस्मत फूटी थी।।
साइत सोधी गई मुबारक राज तिलक की ठना ठनी।
चुप्पे चुप्पे भई तयारी दाँव पेंच से सभा बनी।।
चकले नकलेदार महीपति सेगर धेगर मिला मिलू।
चौथ चौधरी तिसरी जो भी दिरम चिरम जू दिला दिलू।।

सनेथू ग्राम निवासी ठाकुर गजानन्द सिंह जी के सौजन्य से।

जो एखबार नवीश मुसद्दी जैसिहपुर रहते थे।
दिल्ली को शाही चिट्ठी लिखकर के भेजा करते थे ॥
सूबा उनको दौलत देकर राजी करना चाहते।
लेकिन वे थे धरम के पक्के सौ सौ लानत कहते थे ॥
उठा कजल दिल्ली को लिखकर सारा भण्डा फोड़ दिया।
खुला मुगल दरबार न जुंबा कितना उसने शोर किया ॥
दिल्ली की सुस्ती ने चुस्ती भरदी सूबा के दिल में।
खुल्लम खुल्ला लगी तयारी होने वाली महफिल में ॥
गढ़ी का टीला चौरस करके जलसा का तरखूब बना।
सात सीढ़ियों के ऊंचे पर तम्बू जरीं खूब तना ॥
फर्श जम्मुर्रद तुलसी चौरा से उखाड़ कर तख्त बना।
ऋषी मुनी पीरा पैगम्बर सब का दिल था जला भुना ॥
तीन रात गद्दी से पहले नौरंग तनहा आ पहुँचा।
बना हुआ तश्करी सिपाही घुमा फिरा सब गली कुचा ॥
पता लगाकर जयसिंहपुर में पहुँचा मुतसद्दीन के पास।
अपना भेद छिपाकर उनसे करवाया सब परदा फास ॥
उनके साथ गया जलसे में सुना सादियाने बजते।
दल बदल के नीचे लाखों अदुंम भरे खचाखच थे ॥
मुल्ला पण्डित सरा वेद सब रुकन रोक बढ़ि जय बोले।
दुआ असीस सलामत लेकर सूबा चले बदल चोले ॥
बड़ी नजाकत बड़ी नियाकत से जीने पर कदम धरे।
छठवाँ सीढ़ी पर जब पहुँचा कजल ने उसके कान भरे ॥
झट नौरंग चमक कर आया झपटा जीने पर चढ़कर।
सूबा का सिर काट बैठा कद कदम आगे बढ़कर ॥
बुरा कर्म का बुरा नतीजा मिलता है जो जीते जी।
कहा ससुर जी सच है सच है घुमक नचोची योगीजी ॥

होरी खेलें रघुबीर अवध० ०

श्रीहनुमान गढ़ी के एक प्रसाद भक्षी मुसलमान गुलाम हुसेन ने जन्मभूमि के प्रश्न को लेकर एक बार जेहाद करना चाहा था उस युद्ध के सम्बन्ध को निम्नलिखित कविता प्रकट करती है—

सन् १८५६ में होने वाले जन्मभूमि के युद्ध के प्रसंग पर एक प्राचीन कविता—

पच्छिम एक मुल्ला आया म्लेच्छ बहुत संग लाया।
जा बैठा वह जन्म भूमि में झण्डा खड़ा कराया॥
जमा हुए सब तुर्क शहर के मिलकर गर्व बढ़ाया।
खोदेंगे गढ़ी जायकर यह मन मे ठहराया॥
मस्जिद रही कदीम हमारी खोद गढ़ी बनवाया।
हुआ पुकार शहर मुलकों में आँट साहब उठ धाया॥
कर तहकीक तुरुक हिन्दुन की सबसे दिल को पाया।
जान साहब दिन चढ़े यामभर ऐ हैं हुक्म सुनाया॥
करिहैं यही फैसला तुमरा लिक्खा हमको आया।
आँटसाहब और जानसाहबमिलिसब हाकिम समझाया॥
लड़ो नहीं तुम कहना मानो हजरत तुम्हें बुलाया।
साधु भये तैयार चलन को मौलवी कहा न माने॥
नहीं जायेंगे संग तुम्हारे हजरत को क्या जाने।
सुन साहब मौलवी की बातें मन में गुस्सा खाया॥
'लड़ो लड़ाई हम भी देखें गढ़ी पैं हाल पठाया।
बड़े जोर से तुरत मौलवी सब तुरकन लै धाया॥
ह्वै आगे हिन्दुन ने घेरा पग भर बढ़न न पाया।

० श्री अवध की झाँकी (लाला सीताराम लिखित) से
० मूँगा हीरा बेचने वाले एक योगी की जबानी।

भई बरावर मार दुहन की खड्ग खींचकर लड़ते हैं।
तुपक तमंचा कड़ाबीन औ गोलिन फूलन झड़ते॥
महाबीर के दास बाँकुरे तिलभर परग न टारें।
जै धुन बोलें महाबीर की आगे बढ़ बढ़ मारें॥
फिर हिन्दुन मस्जिद को घेरा गुम्बद चढ़कर नागे।
कूद कटहरा तोड़ तुरत लिये तेग तमंचा दागे॥
काटे शीश सयाने क्षत्री सूर्य्य वंश चौहाने।
आगे बढ़ बढ़ करें लड़ाई तोड़ें सीना ताने॥
काट लिए खलिहान तुरत ही लोहू चले पनारे।
भाग बचे जेतने पर तुरकै दे सब ही अघमारे॥
मास अषाढ़ सुदी तिथि चौदस और शनीचर वार।
सम्बत् अठाइस सो बारह में भयो म्लेच्छ संहार॥

(श्रीरामरक्षा त्रिपाठी 'निर्भीक' के सौजन्य से)

परिशिष्ट—

बावर द्वारा विध्वस्त किए गये विक्रमादित्य विनिर्मित श्रीराम जन्मभूमि मन्दिरस्थ श्रीरामचन्द्रजी की कृष्ण पाषाण विनिर्मित प्रतिमा बाबा श्यामानन्द जी द्वारा श्री सरयू जी में समर्पित कर दी गई। कुछ काल बाद लक्ष्मण घाट सहस्र धारा पर एक महाराष्ट्रीय ब्राह्मण नरसिंह राव को प्राप्त हुई जो वर्तमान समय में स्वर्गद्वारास्थ मन्दिर कालेराम में स्थापित है। कहते हैं कि उक्त मूर्ति के प्राप्त होने पर भूत कालीन श्रीजन्मभूमि मन्दिर पुजारी के वंशजों ने अपना दावा पेश किया तो नवाबी अदालत द्वारा फैसला कालेराम मन्दिर के व्यक्तियों के अनुकूल हुआ एवं वादी को अदालत ने यह कह कर खामोश

कर दिया कि जिसे वह मूर्ति प्राप्त हुई है वही पूजने का अधिकारी है।

बाबरी मस्जिद के भीतर एक शिला लेख बाबर ने लगवाया था जिसके ऊपर निम्नलिखित वाक्य लिखे हुए ह—

बफर मूदऽह शाह बाबर कि अदलश।
बनाईस्त वा खाक गरदूं मुलाकी॥
बिना कर्दे ईं महबते कुद सियाँरा।
अमीरे सआदत निशाँ मीर बाँकी॥
बुकद खैर बाकी चूं साले बिनायश।
अयाँ शुद कि महकम बुअद खैर बाकी॥

भावार्थ—बाबर की कीर्तिध्वजा आकाश तक पहुँची मीर बाँकी ने (बाबर के वजीर ने) बाबर की आज्ञा से यह स्थान स्वर्ग से देवताओं के उतरने के लिए बनवाया! "बुअद खैर बाकी" अक्षरों की सांकेतिक लिपि के अनुसार मस्जिद का निर्माण काल ९५ हिजरी निकलता है। जो गणना से सन् १५२८ ई० प्रमाणित होता है।

मस्जिद के द्वार का दूसरा शिलालेख-

बनामें आँ कि दाना हस्त अकबर।
कि खालिक जुमला आलक लाभकानी॥
दरूदे मुस्तफा बादऽज सतायश।
फिसाना दो जहाँ बाबर कलन्दर॥
किशुद्ध दर दौरे गेती कार मानी।

भावार्थ—संसार में शाह बाबर और कलन्दर शाह फकीर की कथा प्रसिद्ध है, जिसके द्वारा उसे संसार चक्र में महान् सफलता प्राप्त हुई।

❁ कजल अब्बास की मृत्यु ❁

सन् १५३० में प्रयाग के प्रसिद्ध सन्त आचार्य श्री देव मुरारी जी के शिष्य महात्मा रामदास जी आए और जन्मभूमि के उत्तर छता गाड़ कर रहने लगे, सिद्ध पुरुष होने से थोड़े ही दिनों में उनकी बड़ी ख्याति हो गई। मुसलमान भी बड़ी श्रद्धा से उन्हें औलिया वेनजीर कहा करते थे। तथा हिन्दू उन्हें गूदड़ बाबा कहते थे। उनकी प्रसिद्ध से० कजल अब्बास को बड़ा डाह हुआ। एक दिन महात्मा जी लघुशंका करके हाथ शुद्ध कर रहे थे। इतने में कजल अब्बास सिंह पर सवार होकर आया महात्मा जी ने एक चिल्लू पानी फेंका जो सिंह की खोपड़ी पर पड़ा। पानी पड़ते ही सिंह अपनी जान लेकर भागा और कुछ दूर ले जाकर शाह साहब को खेत में पटक दिया तथा छाती पर चढ़कर उनका गला दबोच लिया। चिल्लाहट सुनकर महात्मा जी वहाँ दौड़े गये मायावी सिंह अन्तर्ध्यान था और शाह साहब की अन्तिम श्वाँस चल रही थी। बड़ी कठिनाई से महात्मा जी को देखकर शाह साहब के मुख से निकला बन्दा तो वेमौत मारा गया। महात्माजी ने कहा अपने किये का फल भोग शिकायत की उम्मीद छोड़ दे वह तुझे नसीब नहीं होगी, दूसरों को जलाने वाले कभी बख्शे नहीं जाते, हम क्या करें? शाह साहब परलोक सिधार गए उनकी अन्तिम अभिलाषा अनुसार मुसलमानों ने उनकी कब्र वशिष्ठकुण्ड के पास बनाई और कसौटी के ६ स्तम्भ उनकी समाधि के नीचे तथा दो ऊपर स्थापित किए गए। महात्मा जी का स्थापित स्थान अब जन्म स्थान सीता रसोई गूदड़तड़ के नाम से प्रसिद्ध है।

---

० "कहीं-कहीं कदल अब्बास भी लिखा है"

जन्मभूमि और अंग्रेज विद्वान—

प्रमाणिक इतिहास के सूर्योदय के पूर्व अत्यन्त पूर्व से ही अयोध्या पौराणिक कथाओं तथा काव्यों में अपने पूर्ण ऐश्वर्य के साथ वर्तमान पाई जाती है।

— राजकीय गजेटियर

हिन्दुओं के लिए इसका वही महत्व है जो मुसलमानों के लिए मक्का का और ईसाइयों के लिए येरुशलम का। आस्तिक हिन्दू जनता के परम्परा विचारों से यह नगरी एक रहस्यमय उद्गम रही है। क्योंकि अधिक संरक्षित रहने की दृष्टि से विधाता ने इसे नश्वर भूमि पर निर्मित न करके स्वयं अपने रथ चक्र पर ही बनाया।

—पी० कारनेगी

उनमें सबसे प्रमुख श्री रामचन्द्र जी का दुर्ग (किला) स्वरूप निवास स्थान रामकोट ही था वह दुर्ग पर्याप्त भूखण्ड पर विस्तृत था और श्री रामचन्द्र जी के प्रधान सेनाध्यक्षों में से एक द्वारा संरक्षित था प्रत्येक दुर्ग का नाम उसके सेनाध्यक्ष के नाम पर ही पड़ा था। दुर्ग के अन्तर्गत आठ राजकीय महल थे जहाँ पर दुर्ग के स्वामी (श्री रामचन्द्र जी) का निवास था।

—पी० कारनेगी

जब महाराज विक्रमादित्य अयोध्या नगरी में आये तो उन्होंने २६० स्थानों का निर्माण कराया, जो श्री रामचन्द्रजी से सम्बन्धित होने के कारण अत्यन्त पवित्र माने गये।

— एच ईलियट

अयोध्या के समीपस्थ स्थानों के रहने वालों के द्वारा यह कहा जाता है कि मुसलमानों की विजय के समय यहाँ इस नगरी

में ३ प्रधान मन्दिर थे जन्मभूमि ० स्वर्गद्वार + त्रेता का मन्दिर इसमें से पहले स्थान अर्थात् जन्मभूमि पर सम्राट बाबर सन् १५२८ में ही मस्जिद बनवाया जो कि उसके नाम से प्रसिद्ध है। दूसरे स्थान पर औरंगजेब ने सन् १७०७ ई० में मस्जिद बनवाई। तीसरे स्थान पर उसने अथवा उसके पिता ने एक मस्जिद बनवाई।

—डा० विल्सन

सम्राट बाबर सिरवा तथा घाघरा नदी के संगम पर जो स्थान अयोध्या से दो या तीन कोस की दूरी पर पूरब में स्थित है १८२८ ई० में डेरा डाले हुए था वहाँ वह सात आठ दिन तक पड़ा रहा।

—लोजन

सन् १८५६ में एक महान आक्रमण जन्मभूमि को अधिकार में करने के लिए हिन्दुओं द्वारा किया गया। —वेवर

ऐसा कहा जाता है कि इस समय तक पहले हिन्दू और मुसलमान दोनों उसी एक ही इमारत में आराधना किया करते थे, लेकिन सन् १८५७ के गदर के समय से मस्जिद के चारों तरफ एक घेरा डाल दिया गया, इसलिये हिन्दू जिनके लिए मस्जिद के भीतर जाना मना था। अपने नये बनाये चबूतरे के ऊपर आराधना करने लगे।

—दिल्ली गजेटियर पृष्ठ १७४

० वर्तमान बढ़ई घाट पर चन्द्रसरोवर को पाटकर बनाई गई मस्जिद जो अभी वर्तमान है।

+ अहिल्याघाट पर की मस्जिद जो त्रेतानाथ मन्दिर को तोड़कर बनाई गई।

प्राचीन मन्दिर जन्मभूमि का कुछ थोड़ा सा अवशिष्ट अंग अब वैष्णव के निर्मोही अखाड़े के अधिकार में रह गया।

— फैजाबाद गजटियर पृष्ठ ६२

मौलवी अमीरअली के द्वारा एक दूसरा प्रयत्न किया गया, जिसका तात्पर्य प्राचीन मस्जिद पर अधिकार करना था। —लोडॅस

उपसंहार

इस प्रकार अतीत के इतिहास में श्रीराम जन्मभूमि को हस्तगत करने का हिन्दुओं का प्रयत्न जारी रहा। कहना नहीं होगा, कि श्रीराम जन्मभूमि की एक एक इन्च भूमि को हिन्दुओं ने अपने रक्त से सींचकर महान बना दिया है, बलिदान की वीर गाथाओं से जन्मभूमि का रक्तरंजित इतिहास ओतप्रोत है। संसार में किसी भी महापुरुष की पवित्र जन्मभूमि के उद्धारार्थ इतने व्यापक संग्राम नहीं हुए जिस प्रकार संसार में अयोध्या का स्थान प्रमुख है और उसका इतिहास अनेक विप्लवपूर्ण भयानक घटनाओं से भरा रक्तरंजित है उससे कहीं अधिक रोमाञ्चकारी इतिहास जन्मभूमि का है हमने संक्षेप में प्रमुख घटनाओं का उल्लेख इस पुस्तक में किया है।

हिन्दुओं द्वारा श्रीरामजन्मभूमि का उद्धार

२३ दिसम्बर सन् १९४२ भारत वर्ष के लिए अत्यन्त गौरव का दिन हैं क्योंकि उस दिन पौने चार सो वर्षों के बाद श्रीराम जन्मभूमि का उद्धार हो गया भगवान श्रीराम ने अपनी जन्मभूमि का स्वयं उद्धार कर लिया घटना वैचित्र्य को देखते हुए यही कहा जाएगा जिसका संक्षेप में विवरण इस प्रकार है—

कार्तिक कृष्ण ५ को श्री हनुमानगढ़ी पर जनता द्वारा श्रीराम चरित मानस के १०८ नवाह पाठ करने का संकल्प होकर पाठ आरम्भ हुआ जनता के उत्साहपूर्ण सहयोग के कारण १०८ की संख्या के स्थान पर हजारों की संख्या में पाठ हुए सायंकाल के समय विद्वान वक्ताओं के सारगर्भित प्रवचन भी होते थे। पूज्य श्री स्वामी करपात्री जी, बाबा राघवदास, महन्त दिग्विजयनाथ आदि के भाषणों से जनता अत्यन्त आकर्षित थी। उसी समय श्रीराम जन्मभूमि के उद्धारार्थ ११००१ श्रीरामचरित मानस के नवाह श्रीराम विवाह के अवसर पर ही इस निश्चय के अनुसार कई सहस्र की संख्या में जनता नियत समय पर श्रीराम जन्मभूमि पर पहुँची और ११००१ के स्थान पर कई हजार की संख्या में श्रीरामचरित मानस के नवाह पाठ आरम्भ हो गये उस समय की जनता का उत्साह देखने योग्य था।

यह अनुपम उत्साह देखकर मुसलमानों का मत्था ठनका और मियाँ जहूर नाम के नौगजी पर रहने वाले एक तास्सुबी मुसलमान के नेतृत्व में एक मुसलमानों का प्रतिनिधि मण्डल तत्कालीन जिलाधीश श्रीकृष्णकुमार करुणाकरन नायर से जाकर मिला और प्रार्थना किया कि यह रामायण का पाठ बाबरी मस्जिद पर कब्जा करने का एक मात्र कुचक्र है अतएव वह पाठ बन्द कर देना चाहिए फलस्वरूप तत्कालीन सिटी मजिस्ट्रेट ठाकुर गुरुदत्त सिंह फैजाबाद से अयोध्या आये और धमकी भरे स्वर में कहा कि आप लोग पाठ बन्द कर दीजिए अन्यथा ! आप लोगों के साथ उचित कार्यवाही की जायगी जनता ने उनकी बात अनसुनी कर दी और वह जैसे के तैसे फैजाबाद वापस चले गये पाठ का काम बन्द नहीं हुआ। मुसलमानों की ओर से

पुनः एक प्रार्थना पत्र दिया गया कि यह लोग पाठ करने के बहाने कब्रें खोदते हैं फलस्वरूप चार निर्दोष निरपराध बालकों के ऊपर मुकदमा चलाया गया जिन्हें तत्कालीन सिटी मजिस्ट्रेट श्री गुरुदत्त सिंह की अदालत से दो-दो मास की कैद और दो-दो सौ रुपया जुर्माना की सजा हुई जो आगे चलकर अपील से निर्दोष मुक्त हो गये इसी बीच में मुसलमानों की ओर से पुनः प्रार्थना पत्र जिलाधीश के पास दिया गया कि हम लोग बाबरी मस्जिद (जिसे रामजन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है) हम लोग जुमे को नमाज पढ़ेंगे हमारे लिए सुरक्षा का प्रबन्ध होना चाहिये यद्यपि सन् १९३५ के भयानक हिन्दू मुसलिम संघर्ष के समय बाबरी मस्जिद में ३ मुसलमान मार डाले गये थे जिनके कारण से उन्होंने बाबरी मस्जिद में नमाज पढ़ना डर के कारण कतई बन्द कर दिया था तथापि पक्षपात के कारण जिलाधीश ने उन्हें नमाज पढ़ने की आज्ञा दे दी और उनकी सुरक्षा के लिए पर्याप्त पुलिस का प्रबन्ध भी कर दिया किन्तु हिन्दुओं की भयानक भीड़ के कारण उनकी हिम्मत नहीं पड़ी और वे सब जो लगभग ८०-८५ की संख्या में थे बिना नमाज पढ़े ही वापस लौट गये यह घटना २३ दिसम्बर जिस दिन भगवान का प्रादुर्भाव हुआ है उसके लगभग दो सप्ताह पूर्व की है। २३ दिसम्बर को प्रातः ४ बजे श्रीराम जन्मभूमि में आप-से आप भगवान का प्रादुर्भाव हो गया यह घटना ऐसी आश्चर्यजनक थी कि यह समाचार बिजली की तरह प्रथम तो जिले भर में फिर सारे भारत में फैल गया आज का युग इस घटना पर विश्वास नहीं करता किन्तु थी यह एक अत्यन्त आश्चर्यमयी घटना –

भगवान का प्राकट्य

हम यह पूर्व ही लिख चुके हैं कि श्री राम जन्मभूमि पर श्रीराम चरित मानस के नवाह पाठ के कारण मुसलमानों ने उससे आतंकित होकर अधिकारियों के पास पाठ बन्द कराने के प्रयत्न करने आरम्भ कर दिये किन्तु शान्तिमय अपार भीड़ जो वैधानिक ढंग से पाठ कर रही थी उसे उनके धार्मिक कृत्य को बन्द कराने का हठ अधिकारी वर्ग ने नहीं किया बल्कि वहाँ पर सुरक्षा के लिए पुलिस तैनात कर दी जो कि २४ घण्टे सतर्कता पूर्वक पहरा देती थी २३ तारीख को बाबरी मस्जिद कही जाने वाली 'वास्तविक श्रीराम जन्मभूमि' में भगवान के प्रादुर्भुत होने की खबर बिजली की तरह सारे देश में फैल गई अधिकारी वर्ग समस्त शक्तियों से सुसज्जित होकर श्रीराम जन्मभूमि पर पहुँच गये इसके पूर्व ही आस पास के देहातों से लाखों की संख्या में जनता की जबरदस्त भीड़ श्रीराममूमि पर पहुँच चुकी थी उस समय श्रीराम जन्मभूमि पर अबुल बरकात नाम के एक मुसलिम हवलदार की ड्यूटी थी जिलाधीश के सामने जब उपस्थित घटना के सम्बन्ध में उससे बयान लिया गया तो अधिकारी विस्मित हो उठे उसने बयान दिया मेरा नाम अबुल बरकात है, मैं श्रीराम जन्मभूमि (बाबरी मस्जिद) पर ड्यूटी के लिये तैनात किया गया हूँ। और जब से तैनात किया गया हूँ बराबर ड्यूटी दे रहा हूँ। आज तक कोई कारवाई हिन्दुओं की ओर से नहीं हुई जो गैर कानूनी कही जा सके २२-२३ दिसम्बर की रात के लगभग २ बजे जब

कि मैं ड्यूटी पर तैनात था एकाएक बाबरी मस्जिद में कुछ चाँदनी सा नजर आया मैं गौर से उस ओर देखने लगा इसी बीच मुझे मालूम हुआ जैसे एक गबी खुदाई रोशनी मस्जिद के भीतर हो रही है धीरे-धीरे वह रोशनी सुनहली होती गई और उसके भीतर एक बहुत ही खूबसूरत चार पाँच साल के बच्चे की सूरत मुझे नजर आई उसके सिर के बाल घुँघराले थे बदन मोटा ताजा खूब तन्दुरुस्त था मैंने ऐसा खूबसूरत बच्चा अपनी इस जिन्दगी में कभी नहीं देखा था उसे देखकर मैं सपने की हालत में हो गया मैं कह नहीं सकता कि मेरी ऐसी हालत कब तक रही तब तक होश में आया तो देखता हूँ कि सदर दरवाजे का ताला टूटकर जमीन पर पड़ा हुआ है और मस्जिद के भीतर हिन्दुओं की बेशुमार भीड़ घुसी हुई है जो कि एक सिंहासन जिस पर कोई एक बुत रखा हुआ है उसकी "भए प्रकट कृपाला दीनदयाला" गाते हुए आरती उतार रही है बस चटपट मैंने आफिसरों के पास इसकी खबर भिजवाई इसके अलावा मैं कुछ नहीं जानता।

हम कह नहीं सकते कि यह बयान सरकारी कागजातों में दर्ज किया गया या नहीं किन्तु यह बयान हजारों आदमियों के सामने हुआ था।

डी० आई० जी० का शुभागमन

इस घटना के घटते ही उत्तर प्रदेशीय सरकार का सिंहासन कम्पायमान हो गया तत्काल हवाई जहाज द्वारा तत्कालीन डिप्टी इन्सपेक्टर जनरल आफ पुलिस श्री सरदार सिंह मामले की जाँच के लिए लखनऊ से अयोध्या भेजे गये वहाँ की स्थिति और लगातार बढ़ती हुई हिन्दुओं की भीड़ को देखकर वे भी आश्चर्य में

आ गये और टेलीफोन द्वारा तत्कालीन सभा सचिव श्री भगवान सहाय को स्थिति बतलायी। श्री भगवान सहाय ने यह आदेश दिया कि वहाँ के जिलाधीश स्थिति की गूढ़ता को देखते हुए उचित प्रबन्ध करें।

इस आज्ञा के अनुसार तत्कालीन जिलाधीश श्री के० के० नायर ने तत्काल उक्त स्थान को विवादग्रस्त करार देकर धारा १४५ भारतीय दण्ड विधान के अनुसार अपने अधिकार में कर लिया यह घोषणा कर दी कि प्रादुर्भूत भगवान की पूजा अर्चना हिन्दू नियमानुसार करने के लिए ४ पुजारी तथा १ भण्डारी मात्र भीतर जा सकेंगे हिन्दू लोग बाहर जगले से दर्शन कर सकेंगे उन्हें भीतर जाने का अधिकार नहीं होगा यह घोषणा करके नगर पालिका के तत्कालीन अध्यक्ष फैजाबाद के रईश श्री प्रियादत्त रामजी को सिपुर्द कर उन्हें रिसीवर बना दिया।

मुसलमान दिल्ली पहुँचे

इधर मुसलमानों का एक प्रतिनिधि मण्डल दिल्ली पहुँचकर मौलाना आजाद और पं० नेहरू से मिला तथा वहाँ से पन्त सरकार के नाम से एक आज्ञा पत्र प्रेषित किया गया कि अयोध्या की राम जन्मभूमि से प्रादुर्भूत भगवान की प्रतिमा तत्काल हटा दी जाय।

इस बीच में हिन्दुओं की ओर से फैजाबाद के सब जज की अदालत में ठाकुर गोपाल सिंह विशारद के नाम से एक दावा दीवानी में इस आशय का कर दिया गया कि वह स्थान राम जन्मभूमि है अतीत काल से हिन्दू लोग इसमें अपनी 'उपासना' करते चले आते हैं। मुगल कालीन समय में बाबर ने इसे तोड़कर इस पर मस्जिद बनवा लिया

जिसके उद्धार के लिये कई बार बलवे हुए सबसे आखिरी बलवा सन् १९३५ ही में हुआ जिसमें इसी स्थान पर ३ मुसलमान जान से मार डाले गये और मुकदमा चलने पर सभी हिन्दू निर्दोष छूट गये उसी समय इस मस्जिद को तोड़कर जबकि बलवा हुआ था हिन्दुओं ने मूर्ति स्थापित कर दी थी तब से अब तक लगातार अपनी पूजा और उपासना करते चले आ रहे हैं। मुसलमान तब से इसमें कत्तई नहीं आते इधर जब भारत स्वतन्त्र हो गया तो यह विचार किया गया कि अब तो देश पर से विदेशी, शासन समाप्त हो गया है अब श्रीराम जन्म-भूमि का उद्धार हो जाना चाहिये। जिसके लिए नवाह पाठ का आन्दो-लन जनता की ओर से हुआ मुसलमानों ने जो कि लगभग १६ वर्षों से इस स्थान को छोड़ हुये थे जब जिलाधीश महोदय के पास प्रार्थना पत्र दिया कि हम उसमें नमाज न पढ़ेंगे जिलाधीश महोदय ने यह जानते हुये कि ये अब नमाज पढ़ने नहीं आते और १२ वर्ष से अधिक बेदखल रहने से उनका अब उस भूमि पर अधिकार भी नहीं है उनके साथ पक्षपात करके उन्हें नमाज पढ़ने का अवसर दिया, किन्तु फिर उन्होंने नमाज नहीं पढ़ा, क्योंकि उसमें पूर्व से ही मूर्ति स्थापित थी अतः हमारी वह भूमि है, तीर्थ स्थान है उस पर हमारा अधिकार भी है इसलिए हमें अपनी भूमि पर स्वतंत्रता पूर्वक उपासना करने का पूर्ण अधिकार मिलना चाहिये यह दावा जिलाधीश पुलिस कप्तान प्रान्तीय सरकार तथा १६ मुसलमानों के ऊपर किया गया। दावे को अवैध प्रमाणित करने के लिये मुसलमानों की ओर से इलाहाबाद हाईकोर्ट के भूतपूर्व चीफ जस्टिस सर इकबाल ने ३ दिन बहस की, किन्तु

हिन्दुओं की ओर के वकील चौधरी श्री केदारनाथ जी ने उनकी समस्त युक्तियों को खण्डन कर डाला अन्ततः दावे को अवैध ठहराने के मामले में मुसलमानों की हार हो गई जिसकी अपील उन्होंने प्रयाग उच्च न्यायालय में की वहाँ से भी हार हो गई इसके बाद एक प्रार्थना पत्र उनकी ओर से इस आशय का दिया गया कि यहाँ हमें न्याय की आशा नहीं है अतः यह मुकदमा अलीगढ़ भेज दिया जाय सरकार ने इस पर उक्त मुकदमे को प्रयाग उच्च न्यायालय में भेज दिया किन्तु यहाँ यह निर्णय हुआ कि जहाँ का यह मुकदमा है वहीं इसका निर्णय हो अतः वह पुनः फैजाबाद को लौटा दिया गया। अब वह फैजाबाद ही में चलरहा है।

आन्दोलन के सहायक

श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन में जिन लोगों ने प्राणार्पण से सहयोग दिया है उनमें अयोध्या के प्रमुख सन्त श्रीराम पदार्थदास जी वेदान्ती, महन्त हरिहरदास जन्मस्थान, महन्त भगवानदास खाकी, पं० हनुमानदत्त बाबा, श्री उद्धवदास, रामायणी पं० अखिलेश्वर दासजी, महन्त रघुनन्दन शरणजी, पण्डा चन्देश्वर प्रसाद, बाबा अभिराम दास, परमहंस रामचन्द्रदास प्रभृति के नाम उल्लेखनीय हैं प्रादुर्भूत भगवान के सामने जिलाधीश की संगीन के सन्मुख बाबा अभिराम दास जी ने अपनी छाती दी थी। परमहंस श्रीराम चन्द्रदास ने फाटक को खोलने में तथा सभा मण्डप के निर्माणार्थ अनशन किया उनके अनशन के समर्थन में मेरा व्याख्यान हुआ फलस्वरूप भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत हम दोनों आदमी १ मास तक नजरबन्द रखकर फिर छोड़ दिए गये।

बाबा अभिरामदास जी तथा इन पंक्तियों के लेखक को अनन्तकाल तक लगी रहने वाली धारा १४४ तोड़ने के अपराध में १ मास का कारा-वास तथा ५० रु० अर्थ दण्ड न देने पर एक सप्ताह की सजा सुनाई गई। कब्र को विकृत करने के अपराध में श्री भास्कर दास पर आज लगभग ४ वर्ष से मुकदमा चल रहा है उसका अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ जब तक उसका कोई निर्णय न हो तब तक हम इस सम्बन्ध में कुछ लिखने में असमर्थ हैं। श्रीराम जन्मभूमि का मुकदमा भी विचाराधीन है अतः उसके सम्बन्ध में भी अभी हम कुछ नहीं लिख सकते अभी तक जिन तथ्यों का सिंहावलोकन किया गया है यह केवल प्रस्तुत विषय की केवल भूमिका मात्र है और पाठकों को अभी केवल इतने से ही सन्तोष कर लेना चाहिए। अखण्ड कीर्तन का संचालन प्रथम श्री जनक नन्दिनी शरणजी इसके पश्चात् बाबा श्रीराम लखन शरणजी कर रहे हैं। अब इनके बाद श्री राम दयाल शरण जी कर रहें हैं। अखण्ड कीर्तन का चन्दा श्री राम दयाल शरण जी के नाम भेजें जो अनेकानेक कठिनाइयाँ उठाते हुए इसे प्राप्त कर रहे हैं। श्री उद्धवदास जी रामायणी ने सभा मण्डप में कई मास तक कथा बाँची थी इस समय इसका संचालन पं० हनुमानदत्त जी कर रहे हैं। फैजाबाद, के वकीलों में चौधरी श्री केदारनाथ, पं० श्री राम मिश्र, ठाकुर महाबीर सिंह आदि ने श्रीराम जन्मभूमि सम्बन्धी समस्त मुकदमों की बिना शुल्क पैरवी की। भारत प्रसिद्ध धनकुबेर, श्री युगल किशोर बिड़ला "कल्याण" सम्पादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार दास ने आर्थिक सहायता प्रदान की और अब भी कर रहे हैं।

श्रीराम जन्मभूमि के नाम पर व्यवसाय

जिस प्रकार मुसलमानों का बाबरी मस्जिद के नाम पर व्यवसाय चल रहा है उसी प्रकार हिन्दुओं में भी बहुत से ठग श्रीराम जन्मभूमि के नाम पर गली-गली चन्दा माँग रहे हैं। यह सारा चन्दा उनके पेट में जा रहा है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने को रामजन्मभूमि का उद्धारक कहता है कोई-कोई अपने को जन्मभूमि का महन्त कहकर चन्दा माँगते हैं, कोई अपने ऊपर १४ मुकदमें चल रहे हैं यह कहकर चन्दा माँगता है, जनता को यह सब जान लेना चाहिए कि यह ठग हैं इनकी बातों में सत्यता का तनिक भी लेश नहीं है। मुकदमें का समस्त व्यय श्री सेठ युगलकिशोर बिड़ला तथा श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार वहन कर रहे हैं। आविर्भूत भगवान के राग भोग का समस्त प्रबन्ध टंगे हुए बक्सों की आय से रिसीवर महोदय द्वारा होता है अखण्डकीर्तन का प्रबन्ध निर्मोही अखाड़े द्वारा होता है और कोई विभाग ऐसा नहीं जिसके लिए रुपये की आवश्यकता है जनता अपना धन यदि मन्दिरस्थ भगवान के राज भोग के लिए देना चाहती है तो उसे चाहिए कि वह अपना द्रव्य या तो मन्दिर में टंगे हुए बक्से में डाल दे अथवा डाक द्वारा रिसीवर के पास भेज दे। मुकदमें के लिए देना चाहती है तो कल्याण सम्पादक के पास गोरखपुर भेज दे और अखण्ड कीर्तन के लिए देना चाहती है तो उसे निर्मोही अखाड़े के नाम से भेज दें या स्वयं उनसे मिलकर उन्हें दे दे, अन्य किसी व्यक्ति को वह देती है तो समझ लेना चाहिये कि उसका श्रीराम जन्मभूमि से कोई भी सम्बन्ध नहीं है और वह रुपया बट्टे खाते में चला गया।

श्रीराम जन्मभूमि सेवासमिति के नाम से एक कमेटी भी बनी है जिसमें आर्थिक पवित्रता का पूर्ण अभाव है, उस कमेटी की पोल अयोध्या से निकलने वाले "साप्ताहिक विरक्त" पर चलाये गए मुकदमे के द्वारा पूरी तरह से खुल चुकी है अतएव जनता सावधानी से काम ले —

वे ग्रन्थ जिनसे हमें सहायता मिली ।

बाबरनामा, दीवाने अकबरी, हालात गुमनस्ता अयोध्या, वंगीय प्रबन्ध, राज तरंगिणी, तुजुक बाबरी, तारीखे अवध, दरवहिस्त मदीनतुन औलिया, लोमश रामायण, ब्रह्म रुद्रयामल, लाला सीताराम लिखित अयोध्या का इतिहास, अवध की झाँकी, फैजाबाद गजेटियर, गोंडा गजेटियर, लखनऊ गजेटियर, हिस्ट्री आफ दी कारनेगी ।

—दिल्ली गजेटियर

जनमत-

उपर्युक्त ग्रन्थों के लेखक प्रकाशक सम्पादक और संकलन कर्ताओं के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करते हुए हम अब अपनी लेखनी को विश्राम देते हैं ।
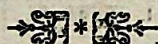
श्री 'शारद' जी के द्वारा लिखित जन्मभूमि का रक्तरंजित इतिहास जन्मभूमि के अतीत की वह वीर गाथा है जो नवोदित हिन्दू राष्ट्र को एक महान प्रेरणा प्रदान करती है ।

महन्त दिग्विजय नाथ

प्रधान मन्त्री अखिल भारत वर्षीय हिन्दू महासभा 'जन्मभूमि का रक्तरंजित इतिहास' अयोध्या का श्री रामजन्मभूमि के अतीत का वह चलचित्र है जिसे दर्शन करने से नौ लाख वर्ष पूर्व का इतिहास हमारी आँखों के सन्मुख आकर भगवान श्री राघवेन्द्र की झाँकी करा देता है और हमारे उत्थान पतन के युग का हमें सन्देश देता हुआ हमें गौरवान्वित करता है इस महत्वपूर्ण खोज के लिये श्री शारद जी बधाई के पात्र हैं।

वेदान्ती राम पदार्थदास जानकी घाट अयोध्या

भगवान श्रीराम की पावन जन्मभूमि के उद्धारार्थ हिन्दुओं के छिहत्तर बार के किए गए आक्रमण यह सिद्ध करते हैं कि जन्मभूमि को हिन्दू जाति शताब्दियों तक नहीं भूल सकी, यही जन्मभूमि की विशेषता एवं महत्ता है। श्री 'शारद' जी का प्रयत्न स्तुत्य है और वे बधाई के पात्र हैं।

हनुमान प्रसाद पोद्दार कल्याण सम्पादक

श्रीराम जन्मभूमि के विषय में लिखी गई श्री 'शारद' जी की पुस्तिका इस भूमि के पवित्र इतिहास को बताने में बहुत ही उपयोगी है, इसके देखने से हमें अपनी पूर्व की स्थिति का पूर्ण ज्ञान होता है। इस इतिहास के खोजने का श्रम 'श्री शारद' जी का पूर्ण प्रशंसनीय है और परम आदरणीय है।

पं० अखिलेश्वर दास

रामघाट रामकुंज, अयोध्या जी

किसी जाति का इतिहास ही उस जाति के अमरत्व का द्योतक है। इसका पूर्ण दायित्व इतिहास लेखक पर होता है और जो इतिहास

जितना बलिदान पूर्ण है उतना ही अमर, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राघवेन्द्र की अयोध्या स्थित पावन जन्मभूमि का रक्तरंजित यह इतिहास भी हिन्दुओं की अमर बलिदान गाथा से ओत-प्रोत है। मेरे विचार से तो यह भारत की ८० कोटि जनता का जीवन प्राण है। श्री शारद जी ने इसके संकलन में बड़ा परिश्रम किया है अतः समस्त हिन्दू जाति इनकी कृतज्ञ है और ये धन्यवाद के पात्र हैं।

दीन दिव्यकला

श्री दिव्यकला कुंज अयोध्या

दोहा—'शारद की यह लेखनी, शारद आशिष पाय।
जन्मभूमि इतिहास रचि, हिन्दुन दीन जगाय॥

यों तो 'शारद' जी को मैं भली भाँति जानता था कि ये सरस्वती के अनन्य कृपा पात्रों में हैं, क्योंकि उनकी काव्य धारा मेरी बुद्धि के अनुसार नितान्त आदरणीय, स्तुत्य तथा जन ग्राह्य और विशुद्ध होती है, पर इनकी पद्य रचना के स थ गद्य रचना और उसके साथ ऐतिहासिक परिज्ञान इनमें मुझे देखने को नहीं मिला था। इनका जन्मभूमि का इतिहास देखकर मुझे आशातीत सन्तोष हुआ और एक हार्दिक समुत्साह उत्पन्न हुआ मुझे आशा है इनका लिखा जन्मभूमि का इतिहास हिन्दू मात्र के हाथोहाथ होगा बस यही एक हिन्दू जाति के जागरण और रामराज्य के पुनः स्थापना का सुन्दर मार्ग है।

रुद्रनाथ सिंह पन्नगेश

भूतपूर्व मैनेजर श्री कनक भवन अयोध्या

मैंने श्री शारद जी द्वारा लिखित जन्मभूमि का रक्तरंजित इतिहास पढ़ा। लेखक ने बड़े परिश्रम से खोज करके जन्मभूमि के इतिहास को

जनता के समक्ष रक्खा है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी हिन्दू सभ्यता और संस्कृति के आधार हैं। जो जाति अपने महापुरुषों का अति आदर और सत्कार नहीं करती तथा उनकी कीर्ति को चिरस्थायी करने के निमित्त बलिदान नहीं कर सकती वह जीवित नहीं रह सकती है। जन्मभूमि का इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिन्दू जाति ने अपने पूर्वजों के पवित्र स्थान की रक्षा और प्राप्ति के लिये कितनी लड़ाइयाँ लड़ीं और कितने बलिदान दिये। मुझे पूर्ण आशा है इस पुस्तक द्वारा हिन्दू जाति को महान स्फूर्ति प्राप्त होगी और वह अपने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र की जन्मभूमि की रक्षा करने में समर्थ होगी। स्वतन्त्र भारत की रक्ष के लिए हिन्दुओं के स्वर को जागृत करना अत्यन्त आवश्यक है। रामराज्य की कल्पना उस समय तक सम्भव नहीं जब तक राम की जन्मभूमि का उद्धार नहीं होता। श्री 'शारद' जी ने इस पुस्तक के द्वारा जन्मभूमि का अमर इतिहास प्रकाशित करके हिन्दू जाति का महान उपकार किया है।

तेजनारायण, एम० ए०

कार्य्यकारी प्रबन्धक सयुक्त, प्रान्तीय हिन्दू महासभा

कविवर श्रीरामगोपाल पाण्डेय "शारद" द्वारा लिखा हुआ श्रीरामजन्मभूमि का रक्तरंजित इतिहास पढ़ा। आपने बहुत परिश्रम से अनेक ग्रन्थों की आलोचना करके और स्थानीय परम्परा कथाओं के आधार पर यह बहुमूल्य ग्रन्थ लिखा है। एक अयोध्या

नगरी के इतिहास पर ऐसे अनेक ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। तीर्थ माहात्मय की अनेक पोथियाँ हैं, परन्तु आपने आधुनिक दृष्टि से यह ग्रन्थ निर्माण किया है। इस ग्रन्थ से श्रीराम जन्मभूमि के आन्दोलन को तो सहायता होगी ही, परन्तु इससे भारतीय इतिहास साहित्य की भी महान सेवा हुई है।

अयोध्या

विष्णु घनश्याम देशपाण्डेय

दि०— ०–१–० संगठन मन्त्री अ० भा० हिन्दू महासभा

हिन्दू महासभा भवन नई दिल्ली

प्रिय श्री शारद जी !

आपका प्रदत्त श्रीजन्मभूमि का रक्तरंजित इतिहास पढ़ा। यह जन्मभूमि की अतीत काल की रणगाथा ही नहीं, अपितु हिन्दुत्व के नव-जागरण को प्रेरणा प्रदान करने वाली करुणरस से ओत-प्रोत एक कथा है—आपका प्रयत्न सराहनीय है और आप धन्यवाद के पात्र हैं।

करपात्री स्वामी

'शारद' जी के द्वारा लिखा गया जन्मभूमि का रक्तरंजित इतिहास हिन्दू जाति के अमर बलिदान के गौरव का प्रतीक है। इस प्रयास पर हिन्दू जाति सदैव इनकी कृतज्ञ रहेगी।

पद्मकान्त मालवीय

अभ्युदय सम्पादक

जन्मभूमि के उद्धारार्थ हिन्दुओं द्वारा किये गए छिहत्तर बार के आक्रमण इस बात के प्रबल प्रमाण हैं कि ग्यारह सौ वर्षों तक पराधीन रहकर भी हिन्दू अपने प्राण जीवन श्री राम को नहीं भूले और उनकी पावन जन्मभूमि के उद्धारार्थ वे कृतसंकल्प रहे। यह प्रमाणयुक्त खोज करके श्री शारद जी ने भावी हिन्दू सन्तान का उपकार ही किया है और इसके लिए यह जाति श्री शारद जी की सदैव कृतज्ञ रहेगी।

हिजहाइनेस महाराजा श्री जगेन्द्र सिंह देव

सीहावल स्टेट बघेलखण्ड, विन्ध्य प्रदेश

श्री शारद जी द्वारा लिखित जन्मभूमि का रक्तरंजित इतिहास हिन्दुओं के ज्वलंत शौर्य्य की वह गाथा है, जिसका उत्तर किसी भी अन्य राष्ट्र के पास नहीं है।

हिजहाइनेस सर महाराजा भवानी सिंह

छतरपुर नरेश छतरपुर, विन्ध्य प्रदेश

भगवान श्री रामचन्द्र जी की ही भाँति उनकी जन्मभूमि का इतिहास भी करुण घटनाओं से भरा और रक्तरंजित है यही जन्मभूमि की सबसे बड़ी विशेषता है और इसकी खोज का सफल प्रयास तो इससे भी महत्वपूर्ण है, श्री शारद जी ने यह पुण्य कार्य करके हिन्दू जाति पर वह उपकार किया है, जिसे भारत का प्रत्येक हिन्दू कभी भूल नहीं सकता।

हिजहाइसेन श्री मन्हेन्द्र महाराजा सर यादवेन्द्र सिंह देवबहादुर

पन्ना विन्ध्य प्रदेश

श्री शारद को मैं केवल एक अत्यन्त प्रतिभाशाली कवि ही समझता था, किन्तु उनका लिखित 'जन्म भूमि का रक्तरंजित इतिहास' पढ़कर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि वे केवल उच्च श्रेणी के कवि नाटककार और कहानी लेखक ही नहीं, प्रत्युत उत्तम कोटि के इतिहासकार भी हैं, जिसका

सफल प्रमाण प्रस्तुत पुस्तक है। भगवान श्रीराम के नाम ही की भाँति उनकी यह अमर रचना भी युगों तक अमर रहेगी, ऐसी मेरी धारणा है।

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी, एम० ए०

प्रोफेसर बेसिक ट्रेनिंग कालेज, प्रयाग

"श्री शारद जी द्वारा प्रणीत जन्मभूमि का रक्तरंजित इतिहास जन्मभूमि पर बलिदान हुए हिन्दू वीरों की वह पवित्र स्मृति है, जो प्रत्येक हिन्दू नामधारी के लिए संग्रहणीय एवं उपादेय है। इसके द्वारा श्री शारद जी अमर हो गये हैं।"

संगीत सम्राट प्रोफेसर भगवतकिशोर व्याकुल सितारेहिन्द

सनातन धर्म प्रचारक

"जन्मभूमि का इतिहास जन्मभूमि की ही भाँति गौरवमय है। लेखक ने इसके द्वारा, राष्ट्र की विभूति को सुरक्षित किया है।"

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन

अध्यक्ष संयुक्त प्रांतीय कांग्रेस कमेटी तथा

स्पीकर संयुक्त प्रान्तीय सरकार

"जन्मभूमि का इतिहास भगवान श्रीराम का वह पवित्र स्मारक है, जो जन्मभूमि से भी कहीं अधिक गौरवमय है।

देवदत्त शास्त्री

सम्पादक जननी, प्रयाग

"जन्मभूमि का इतिहास राष्ट्र की अमर विभूति है और उसके लेखक धन्यवाद के पात्र हैं।"

हरिचरण दयाल वर्मा शास्त्री

सम्पादक जागृति, प्रयाग

श्रीराम जन्मभूमि बनाम बाबरी मस्जिद

(१)

होती हैं मीनारें दो दुनी की मस्जिदों में यहाँ,
एक भी मीनार नहीं इसे अनुमानिये।
होती परिक्रमा नहीं और नहीं बुत होते,
यहाँ परिक्रमा मूर्ति खम्भ देखि ठानिये।
कुआँ नहीं हुआँ—इसे मस्जिद कहे हैं कैसे,
कैसे इसे मुल्ला की नमाज गाह जानिये।
मेरी जान 'पन्नगेश' मस्जिद नहीं है बस
इसे तो मुसल्लन की महज जिद्द मानिये।

(२)

सातें आसमान बसें अल्ला मियाँ मुल्लन के,
बसें गिरजे में गाड ईसा मसीह टेरी है।
तूर कन्दरों में घुसा था न पाया पता,
तिमिर न दूर हुआ किया नित्य फेरी है।
कोऊ कहें ब्रह्म कोऊ कर्म अरिहन्त कहें,
किसी के अकरमा बनें केहू न निबेरी है।
हिन्दुओं के राम इसे जानता जहान राम,
की ही है अयोध्या रामजन्मभूमि मेरी है।

"पन्नगेश"

महाकवि श्रीलाल रुद्रनाथ सिंह 'पन्नगेश' के सौजन्य से

श्रीजन्मभूमि में भगवान का प्राकट्य

१— कोरदार कजरा मरोर दार केश कान्ति,
जोरदार जुलुफ जंजीर लटकनियाँ।

छाजै पीत झँगुली विराज कण्ठ मुक्त माल,
बाजै मन्जु कटिकी विचित्र करधनियाँ ॥
पद नख चन्द्रिका की अमल अनूप छटा'
धाय गोद लेत देखि दशरथ की रनियाँ।
सोई रामलाल जगपाल बालरूप आज,
खेलि रहे प्यारी जन्म भूमि अंगनियाँ ॥

२—वेद शत वरष बिताय महि मण्डल में,
नव दिनकर की किरण-कान्ति फूटी।
हर्ष को अपार पारावार उमड्यो है मन्जु,
दासता की जर्जरी जंजीर आज टूटी ॥
चरितार्थ स्वप्न भी अतप राम राज्य वारी,
पाई भक्त वृन्द ने सजीवन की बूटी।
झाँकी जन्मभूमि में विशाल अति बाँकी भव्य,
बाल रामचन्द्र जी की अधिक अनूठी है ॥

—: तीन :—

तीन लोक शासन का आसन जहाँ था कभी।
आज वहाँ शून्यता की बजती बधैया है ॥
अस्थि प्राण शेष कुछ साधू घूमते हैं और।
भूखे बन्धे बच्छ एक रांभ रही गइया है ॥
'शारद' महान् अस्सी कोटि हिन्दुओं के नाथ।
जिनकी कथा का नहीं कोई भी सुनैया है ॥
टीन की है छाया मायापति के महल पर।
तीन फीट ऊँची एक फूस की मड़ैया है ॥

"शारद"

श्रीराम जन्मभूमि का ताला कैसे खुला

भगवान श्रीराम जी द्वारा अपने जन्म स्थल पर पुनः २२।१२।१९४९ को प्रकट होने के बाद स्थान पर ताला लगा दिया गया था, लेकिन भगवान को पूरा भोग आदि रिसीवर के माध्यम से चलती रही त्योहारों के अवसर पर नगर मजिस्ट्रेट के आदेश पर कुछ भक्तगणों को अन्दर दर्शन करने की आज्ञा मिलती रही, परन्तु सभी भक्तगण अन्दर नहीं जा सकते थे।

वर्ष १९८४ में विश्वहिन्दू परिषद के तत्वावधान में श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति का गठन हुआ, जिसमें ८ अक्टूबर १९८४ को श्री रामजानकी रथ जनक पुर से चल कर अयोध्या में विराजमान किया ८ अक्टूबर १९८४ को लाखों रामभक्तों ने धर्माचार्यों के दर्शन करके श्रीराम जन्मभूमि को मुक्त कराने का संकल्प लिया। यह रथ-यात्रा लखनऊ पहुँची जहाँ पर दस लाख राम भक्तों ने इसे मुक्त करने का संकल्प लेकर ऐतिहासिक रैली को इस रैली के बाद श्रीराम जानकी रथ अपनी आगे की यात्रा पर चल पड़ा जिसे भारत की प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधी की जघन्य हत्या के कारण स्थगित करना पड़ा।

पुनः विश्वहिन्दू परिषद ने सात श्रीराम जानकी रथ सम्पूर्ण यू० पी० में घुमाने का कार्य क्रम रखा ये सभी रथ जनजागरण करने के लिए २१ अक्टूबर १९८५ को अयोध्या से रवाना हुये प्रत्येक स्थान पर इनका भव्य स्वागत हुआ एवं लाखों लाख व्यक्तियों ने तनमन धन से सहयोग देने का संकल्प लिया। इस जनजागरण से शासन, राजनैतिक पार्टियाँ एवं प्रशासन गहरे सोच विचार में पड़ गये। इसी सन्दर्भ

में आँल यू० पी० हिन्दू धर्म के सभी धर्माचार्यों की धर्म संसद का भी अधिवेशन हुआ जिसमें एक मत से श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति कराने के लिए हर प्रकार का बलिदान देने का आवाहन किया गया। आगामी कार्यक्रम के अनुसार ८ मार्च १९८६ को सभी रथ एवं रामभक्तों को अयोध्या में एकत्र होकर श्रीराम जन्मभूमि को मुक्त कराना था, परन्तु श्रीराम महिमा अपरम्पार है वह रामभक्तों में संघर्ष की स्थिति नहीं देख सकते उन्होंने श्री उमेश पाण्डे नवयुवक अधिवक्ता को निमित्त बनाकर एक मुकदमा जिला जज फैजाबाद की अदालत में दिनांक २५ जनवरी १९८६ को दायर कराया जिसका निर्णय श्रीकृष्ण मोहन पांडे जिला जज ने दिनांक १-२-८६ को सुनाया उस आदेश के सुनते ही श्रीराम जन्मभूमि का ताला सभी भक्त गणों के दर्शन पूजा के लिए पूर्व से ही तत्पर श्री अयोध्या कोतवाल श्री वी० पी सिंह ने सायं ५ बजकर २० मिनट पर खोल दिया। ताला खुलने की खबर जंगल में आग की तरह तुरन्त फैल गई, सारे भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी दीवाली मनाई गई अयोध्या में लगातार ८ दिन तक दुकानों मकानों मन्दिरों पर दीवाली मनाई जा रही थी तथा शोभायात्राओं का ताता लगा हुआ भारत में नहीं विश्व के प्रत्येक हिस्सों से श्रीराम भक्तों की बाढ़ अयोध्या की ओर उमड़ पड़ी है। अब श्रीराम की अनुकम्पा से श्रीराम जन्मभूमि पर पुनः एक दिव्य, एवं विशाल मन्दिर के निर्माण होने की आशा बलवती हो गई है। आइये भगवान से प्रार्थना करें कि मन्दिर निर्माण का यह करोड़ों श्रीराम भक्तों का स्वप्न जल्दी ही साकार हो।

मुद्रक — श्री विश्वेश्वर प्रेस, बुलानाला—वाराणसी

नित्य पाठ की अनुपम पुस्तकों की

रामपटल भा० टी०

सिद्धान्तपटल

वैष्णव कुलभूषण सार संग्रह १

रामचरित मानस भा० टी० बड़ी ६०) रुपया

रामायण भा० टी० मझोला ५०) रुपया

रामायण गु० मूल पाठ १०) रुपया

रामार्चा महात्म भा० टी० ४) रुपया

श्रीराम स्तुति राम अष्टक कृष्ण अष्टक सहित बड़ी २) रुपया

हनुमान चालीसा १.५० पैसा

दुर्गा चालीसा १.५० पैसा

शिव चालीसा १.५० पैसा

लक्ष्मी चालीसा १.६० पैसा

बजरंग बाण .५० पैसा

सूर्य पुराण ६० पैसा

अयोध्या महात्म्य १) रुपया

वी० पी० द्वारा पुस्तक मँगाने का पता :-

पं० द्वारिकाप्रसाद शिवगोविन्द पुस्तकालय

अयोध्या (कोतवाली के सामने)